RNI No. 7127/60

डाक पंजीयन संख्या - Jaipur City / 411 2023-25

संघशक्ति

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 60 अंक : 09 प्रकाशन तिथि : 25 अगस्त कुल पृष्ठ : 36 प्रेषण तिथि : 4 सितम्बर 2023

शुल्क एक प्रति : 15/- वार्षिक : 150/- रुपये पंचवर्षीय 700/- रुपये दस वर्षीय 1300/- रुपये

वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः ।
निर्विघ्नं कुरूमेदेव सर्वकार्येषु सर्वदा ।।

एशिया का सबसे बड़ा कपड़ा बाजार सूरत (गुजरात) में 80000 कपड़ा व्यापारियों का मार्गदर्शन करने वाली संस्था फेडरेशन आफ सूरत टेक्सटाइल ट्रेडर्स एसोसिएशन (FOSTTA) के डायरेक्टर पद पर राजस्थान राजपूत समाज के ट्रस्टी एवं राजस्थान राजपूत परिषद के संरक्षक महेन्द्र सिंह भायल (मवड़ी) को विजयी होने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

-: शुभेच्छु :-

भंवर सिंह तेना, भल सिंह आकोली, गिरधर सिंह सिरघुवाला, छतर सिंह मालूंगा, बुध सिंह केतु, महेन्द्र सिंह चोरड़िया, लाधु सिंह मालूंगा, , मनोहर सिंह दुजार, छोटु सिंह मसुरिया, मोहकम सिंह फुलिया, दलपत सिंह आकुना, महीपाल सिंह हरसाणी , अगर सिंह छंतागढ़, शंकर सिंह राजमथाई, नीम सिंह भाड़ली, पूरण सिंह धवला, जालम सिंह चांदेसरा, ओम सिंह हाथीतला, मिठु सिंह काठाड़ी, प्रभु सिंह छंतागढ़, भंवर सिंह निम्बोला

संघशक्ति

4 सितम्बर, 2023

वर्ष : 60 अंक : 09

-: सम्पादक :-

लक्ष्मणसिंह बेण्यांकाबास

शुल्क – एक प्रति : 15/- रुपये, वार्षिक : 150/- रुपये, पंचवर्षीय : 700/- रुपये, दस वर्षीय : 1300/- रुपये

विषय - सूची

समाचार संक्षेप		04
चलता रहे मेरा संघ	श्री भगवानसिंह रोलसाहबसर	06
पूज्य श्री तनसिंहजी (के सम्बन्ध में)	श्री चैनसिंह बैठवास	08
पृथ्वीराज चौहान	श्री विरेन्द्रसिंह मांडण	10
जन्म कर्म च मे नित्यम्	श्री जयदयाल जी गोयन्दका	12
हिन्दू संस्कृति : मर्यादा के दृष्टिकोण	श्री गुमानसिंह धमोरा	15
महान क्रान्तिकारी राव गोपालसिंह खरवा	श्री भँवरसिंह मांडासी	16
क्षत्रियत्व और श्री क्षत्रिय युवक संघ	स्व.श्री हनुमानसिंह गांगियासर	19
आदर्श और अनूठे गाँव	कर्नल हिम्मत सिंह	20
आँख आना	डॉ. ईश्वरसिंह ढीमा	24
साधना में काया (शरीर) का महत्त्व	डॉ. मनोहरसिंह किनसरिया	26
क्रोध पर विजय	सुश्री रश्मि रामदेरिया	29
विचार आधुनिक हों परन्तु संस्कार भारतीय	श्री गोविन्दसिंह कसनाऊ	31
अपनी बात		33

समाचार संक्षेप

पू. नारायणसिंहजी रेड़ा की जयन्ती :

श्री क्षत्रिय युवक संघ के तृतीय संघ प्रमुख पू. नारायणसिंहजी रेडा की 83वीं जयन्ती 30 जुलाई को अनेक स्थानों पर उत्साह पूर्वक मनाई गई। 30 जुलाई, सन् 1940 को जन्मे पू. नारायणसिंह जी ने 10 वर्ष तक पू. तनसिंहजी की मौजूदगी में और 10 वर्ष तक पू. तनसिंहजी के स्वर्गवास के बाद तक श्री क्षत्रिय युवक संघ के संघप्रमुख का दायित्व निभाया। पू. तनसिंह जी की इच्छानुसार कर्मरत रह कर पू. नारायणसिंह जी ने आध्यात्मिक ऊँचाईयाँ प्राप्त की। उनकी उपलब्धि ने पू. तनसिंह जी के इस कथन को सत्यापित कर दिया कि श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य ईश्वर की आराधना ही है। सृष्टि रचयिता प्रभु अपनी इस रचना में सुख-शान्ति देखना चाहते हैं, और चाहते हैं कि सभी अपना कर्तव्य पालन करते रहें। क्षत्रिय युवक संघ संस्कार निर्माण करने वाली कार्यशाला है और संस्कारित व्यक्ति ही सुख-शान्ति स्थापित करने में उपयुक्त पात्र होता है। संघ में कर्तव्य पालन की भी सीख मिलती है और स्वधर्म पालक, ईश्वर की राह का राहगीर ही होता है। अत: संघ कार्य ईश्वर की उपासना का ही रूप है। पू. नारायणसिंह जी ने प्रचलित पूजा-पाठ आदि के माध्यम से नहीं, पू. तनसिंह जी की इच्छानुसार संघ कार्य में कर्मरत रहकर उस उपासना को फलीभूत कर दिखाया। इसीलिए वे सदैव हम सभी की प्रेरणा के स्रोत बने रहेंगे।

बीकानेर में माननीय संरक्षक श्री भगवानसिंह जी के सान्निध्य में जयन्ती कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। केन्द्रीय कार्यालय जयपुर में संघप्रमुखश्री के सान्निध्य में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। गुजरात में सुरेन्द्रनगर स्थित शक्तिधाम में, सूरत में, राजपूत छात्रावास धंधूका में, जड़िया, धानेरा में, कालियाबीड़ भावनगर में, महिला शाखा अवाणिया में, बालक शाखा अवाणिया में, मोरचंद में, नारी में, लॉ गार्डन अहमदाबाद में, काणेटी में, अड़ास जी आणन्द में, शिशांग में तथा सेन्ट्रल बिस्टा गार्डन गाँधीनगर में जयन्ती कार्यक्रम सम्पन्न हुए। महाराष्ट्र में पुणे में, भायंदर मुंबई में, दक्षिण मुंबई में तथा खारघर नवी मुंबई में जयन्ती कार्यक्रम आयोजित हुए। मध्यप्रदेश में कचनारा व चिकलाना में जयन्ती मनाई गई। नेहरू पार्क दिल्ली में, मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग श्री शैलम हैदराबाद में तथा बेंगलुरू में जयन्ती कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

चित्तौड़गढ़ जिले में कपासन, भूपाल राजपूत छात्रावास चित्तौड़गढ़, हाड़ा की मोरवन तथा खेड़िया में कार्यक्रम सम्पन्न हुए। लक्ष्मण राजपूत छात्रावास डूँगरपुर, गोपीनाथ का गड़ा बांसवाड़ा, गंगापुर भीलवाड़ा, अलख महाराज जी मंदिर बाली, दानसिंह जी राजपूत छात्रवास पाटन, महाराणा प्रताप छात्रावास नाथद्वारा, दुर्गा महिला विकास संस्थान सीकर, आयुवान निकेतन कुचामन सिटी, वरिया, विजयनगर अजमेर, नैणिया परबतसर, दवाड़ा जैसलमेर, दत्ताणी सिरोही, लुणोल सिरोही, सरस्वती विद्यालय वडगाम, रामजी मंदिर पांथावाड़ा, गेडाप बीदासर, राजपूत धर्मशाला पायली, राजपूत छात्रावास सरदार शहर, भूकरका चूरू, तारासिंह स्मृति छात्रावाल तारानगर चूरू, जाखड़ी जालोर में कार्यक्रम सम्पन्न हुए। जोधपुर जिले में माणकलाव, नांदडी, पाल गाँव, माण्डू कलां, जोधसिंह सिद्धा तथा सेतरावा में जयन्ती मनाई।

बाड़मेर जिले में बूठ, बिताया, श्री क्षत्रिय बोर्डिंग चोहटन, खारा राठौड़ान, आलोक आश्रम, जयभवानी छात्रावास, केलनोर, मीठड़ा, इन्द्रोई, हरसाणी, टापरा,

सेड़वा, दानजी की होदी, भगु साढे ही ढाणी बाखासर, हाथीतला, भालीखाल, उण्डखा वीर दुर्गादास छात्रावास बालोतरा व बूल में जयन्ती मनाए जाने के समाचार हैं।

इस वर्ष तनसिंह जी का जन्म शताब्दी वर्ष चल रहा है अतः सभी कार्यक्रमों में जन्म शताब्दी कार्यक्रम की भी चर्चा की गई।

संरक्षक श्री का संयुक्त अरब अमीरात प्रवास :

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक श्री भगवानसिंह जी 19 जुलाई से 25 जुलाई तक संयुक्त अरब अमीरात के प्रवास पर रहे। दुबई राजपूत समाज के तत्वाधान में 19 जुलाई को साउथ दुबई के र होटल, अलबदशा 2, दुबई में स्नेह मिलन कार्यक्रम रहा। कार्यक्रम में दुबई राजपूत समाज के अनेक प्रमुख लोग उपस्थित रहे। श्री क्षत्रिय युवक संघ की जानकारी संरक्षक श्री ने सभी तक पहुँचाई। 20 जुलाई को मरमुम क्षेत्र में स्नेह- मिलन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें समाज बन्धुओं के साथ मातृशक्ति की उपस्थिति भी रही। पू. तनसिंह जी के जन्म शताब्दी वर्ष पर आयोजित होने वाले कार्यक्रम की जानकारी भी दी गई। 21 जुलाई को आबूधाबी के स्टेबल एरिया में भी समाज बन्धुओं के साथ स्नेह मिलन कार्यक्रम आयोजित रहा। 22 जुलाई को सुथार समाज व राजपूत समाज ने साममुहिक स्नेह मिलन कार्यक्रम रखा। । 23 से 25 जुलाई तक समाज के विशिष्ट सदस्यों से मिलन व विचार-विमर्श चलता रहा तथा 25 जुलाई की रात को संरक्षक श्री व साथी जयपुर लौट आए।

अन्य प्रदेशों में सम्पर्क :

पू. तनसिंह जी के जन्म शताब्दी वर्ष में श्री क्षत्रिय युवक संघ की बात चारों तरफ प्रसारित करने के लिए अन्य प्रदेशों में भी सम्पर्क साधा जा रहा है। संघ के परिचय के साथ ही पू. तनसिंह जी की स्मृति में जन्म शताब्दी के प्रस्तावित दिल्ली के कार्यक्रम की सूचना भी प्रस्तारित की जा रही है। 28 जनवरी, 2024 को दिल्ली में कार्यक्रम प्रस्तावित है। हरयाणा के मानेसर में इसी हेतु 15 जुलाई को एक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें प्रदेश के विभिन्न भागों से अनेक लोग सम्मिलित हुए। अगले दिन 16 जुलाई को दिल्ली के वसन्त कुँज में स्थित आद्यशक्ति कात्यायनी देवी मंदिर के सामुदायिक भवन में पारिवारिक स्नेह मिलन आयोजित हुआ। दिल्ली में निवासरत भिन्न-भिन्न प्रदेशों की सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधि तथा दिल्ली शहर में निवासरत परिवारों ने इसमें भाग लिया। दिल्ली के आसपास के उत्तरप्रदेश क्षेत्र में भी दल बनाकर प्रचार-प्रसार जारी है।

सम्पर्क यात्राएँ :

2 जुलाई को जयपुर के करीरी व दिवराला में, 2 जुलाई को ही शेखावाटी संभाग के झुंझुनू जिले के छावसरी, नंगली, केड, चंवरा, किशोरपुरा, नेवरी, दीपपुरा, कंकराना, मंडावरा, छापोली, गिरावड़ी, मनकसास, बाघोली, सराय, सूरपुरा, पचलंगी व मावता गुड़ा आदि गाँवों से सम्पर्क किया गया। 11 जुलाई को बडोदरा (गुजरात) में सम्पर्क कार्यक्रम रखा गया। 93 वर्ष की आयु में संघ के वरिष्ठ स्वंयेवक श्री बलवंतसिंह जी पांची ने 93 गाँवों में जन्म शताब्दी वर्ष सम्बन्धी यात्रा करने का संकल्प लिया है और उनकी यात्रा चालू है। 18 जुलाई को 9 गाँवों की यात्रा की गई। उत्तर गुजरात संभाग के मेहसाणा प्रान्त में बडनगर तहसील के गाँवों में, सिद्धपुर तहसील के गाँवों में, 16 जुलाई को सम्पर्क यात्रा रही। पालनपुर प्रान्त के वडगाम में भी 16 जुलाई को यात्रा हुई। वडगाम तहसील के मालोसणा गाँव में 23 जुलाई को यात्रा की गई।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

चलता रहे मेरा संघ

(भवानी निकेतन, जयपुर में आयोजित उच्च प्रशिक्षण शिविर-2023 में माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर द्वारा 29.05.2023 को प्रदत्त विदाई संदेश)

कुलदेवी के रूप में क्षत्रिय कुल का कल्याण करने वाली माँ भगवती...तुझे नमस्कार है...परम पूज्य केसरिया ध्वज को नमस्कार है.. हमारे सबके सम्बल एवं प्रेरक पूज्य तनसिंह जी को नमस्कार है। प्रिय बंधुओं! आप अनुभव कर रहे होंगे कि आज पूर्णाहुति के यज्ञ में अंतिम आहुति देने के लिए हमारे पास क्या बचा है? कर्म, ज्ञान और भक्ति की त्रिवेणी बहते हुए हमने देखा है। खुशी का मौका है, अब हम कर्म करने के लिए संसार में उतरेंगे। फिर यह आँसू कैसे? पूज्य तनसिंह जी ने एक विदाई प्रवचन में कहा था कि मुझे माँ भगवती का स्पष्ट रूप दिखाई दे रहा है जिसके एक आँख में आँसू है और एक में मुस्कुराहट है। बीते युगों की बात हमने की, हमारे पूर्वजों द्वारा किया गया बलिदान हमने याद किया, उससे प्रेरणा ली, माँ इससे खुश है। जातिस्वरूपा माँ हम को आशीर्वाद दे रही है- जाओ धूम मचाओ। दुनिया वालों को दिखा दो कि एकता क्या होती है, संगठन क्या होता है, भावनाएँ क्या होती हैं। आँसू बहाने से काम नहीं चलेगा।

हमारी परम्परा कहती है कि हमारी आँखों में लाल डोरे होने चाहिए। जो कुछ घट रहा है दुनिया में 'त्रस्त प्राणी वेदना में करुण क्रंदन कर रहे' क्या हमको दिखाई दे रहा है, क्या हमको सुनाई पड़ रहा है? हम भाग्यशाली हैं कि ये बातें, यह तनसिंह जी का दुनिया को दिया गया संदेश हमने धारण किया है और मैं लगातार आपके साथ रहकर के अनुभव कर रहा हूं.. ऐसे दुर्लभ प्राणी.. ऐसे दुर्लभ बन्धु संसार में कहीं नहीं हैं। ऐसे लोगों को बिछुड़ते हुए देखकर स्वतः ही आँसू ढ़लक पड़ते हैं। आप महसूस कर रहे होंगे कि जयपुर के इस विशाल प्रागण में, भवानी निकेतन के प्रांगण में हम इतने दिन रहे हैं, कितना भूचाल आया हुआ था, कभी पश्चिमी क्षोभ का विक्षोभ का कभी दक्षिणी विक्षोभ था। हवाओं ने आँधियों ने, तूफानों ने हमारे तंबू तक को उखाड़ दिया। हम डटे रहे क्योंकि हमने यही शिक्षा प्राप्त की है।

भारतवर्ष यदि पुनः अपने गौरव को प्राप्त करेगा तो उसके हरकारे आप ही होंगे। आप पीछे चलने वाले नहीं हैं, आप पायनियर्स हैं, आगे चलने वाले हैं, नेतृत्व करने वाले हैं, इस बात को कभी भूलें नहीं। इस विदा के क्षण में यदि हम यह याद रख सकें तो अवश्य रखें। सब कुछ शान्त हो गया है, ना आज के दिन हवाएं हैं, ना बादलों की गड़गड़ाहट है, ना बिजलियों की चकमकाहट है। आप लोगों को देख रही हैं सब कि कैसे अनूठे सिपाही हैं। बिना सिर के जूझने वाले, साधनों से रहित, संसार को जीतने के लिए चले हैं। हमारा अब यह अभियान दिग्विजय है। लोगों को कुचलकर नहीं, लोगों के दिलों को जीत कर। जिस प्रकार से हमने हीरक जयंती मनाई आगामी कुछ दिनों बाद हम तनसिंह जी साहब का जन्म शताब्दी वर्ष मनाएंगे और वह मनाना एक ऐसा सबूत होगा कि उन्होंने क्या किया था, कौनसा मंत्र हमारे अन्दर फूँक दिया, कैसे हम अनुशासित हो गए। सारा संसार अराजकता की ओर जा रहा है और हम व्यवस्था में, अनुशासन में कैसे ओत-प्रोत हो गए हैं। यह केवल दिखाने के लिए नहीं, प्रदर्शन के लिए नहीं। पाखण्डी लोग प्रदर्शन किया करते हैं। हम असल में इस संसार में सुख, समृद्धि और शान्ति को उतार ले आएंगे, ऐसा दृढ़ संकल्प हमने लिया है। कभी हमारे दिलों में दरारें पड़ गई थीं, उनको पाटने का प्रयत्न कर

रहे हैं। समय अवश्य लगेगा। यह दुनिया का प्रवाह हम जानते हैं किस प्रकार का है। उसको मोड़ना, रास्ते पर लाना, मार्ग पर लाना, मिलन पर ले आना, योग की ओर ले आना काफी कठिन है। कठिन है लेकिन असंभव नहीं है। यह हमने अपने अंतर में घटते हुए देखा है। हम कोई महापुरुष नहीं हैं, हम कोई देवदूत नहीं हैं, किंतु हमने हमारे अन्दर अन्तःकरण में होने वाले बदलाव को देखा है, परिवर्तन को देखा है और आशाओं को लिए हुए हम यहाँ से जा रहे हैं कि जिस प्रकार से हमारे अंदर बदलाव हो रहा है, हम संसार में भी बदलाव अवश्य करेंगे। यही हमारा संकल्प है, यही हमारी दृढ़ प्रतिज्ञा है। केसरिया ध्वज के समक्ष तलवार को साक्षी दे, भुजा उठाकर हमने कोई इस प्रकार की बात नहीं कही तो कोई बात नहीं। हम अपनी बात समझते हैं और दुनिया को बदलाव का रास्ता वो ही दिखा सकते हैं जो स्वयं बदलना जानते हैं। अभी इस विदा के क्षण में उत्साह और जोश के साथ उस वातावरण में जाएँ, जो गंदला है, जो दूषित है, अंधकार से पटा हुआ है लेकिन मैं अनुभव कर रहा हूं कि जहां आप होंगे, अंधकार भग जाएगा। वहां प्रकाश हो जाएगा। प्रकाश के पुञ्ज हैं आप लोग। इस विदा के क्षण में क्षत्रिय युवक संघ की ओर से मैं आपको विदा देता हूँ।

●

पृष्ठ 5 का शेष

समाचार संक्षेप

कार्य योजना बैठकें :

29 जुलाई को लाडनू में, 8 जुलाई को पूर्वी राजस्थान संभाग की संघशक्ति कार्यालय जयपुर में, 9 जुलाई को बाली में, 9 जुलाई को ही पालनपुर प्रान्त की दुढियावाड़ी में, थराद प्रान्त की पीलुड़ा में कार्य योजनाएँ सम्पन्न हुई।

स्नेहमिलन कार्यक्रम व साप्ताहिक शाखाएँ :

तनसिंह जी के जन्म शताब्दी वर्ष निमित्त अनेक जगहों पर स्नेह मिलन अथवा साप्ताहिक शाखाओं का आयोजन रहा। 2 जुलाई को सरदारशहर में, 30 जुलाई को तारानगर (चूरू) में, 28 जून को साबला तहसील के बिलुड़ा गाँव में, 2 जुलाई को कपासन के बेणीपुरिया में, 2 जुलाई को चित्तौड़गढ़ के बड़का अमराणा में, 2 जुलाई को केकड़ी में, 2 जुलाई को साबला तहसील के वणवासा में, भेखरेड में, 2 जुलाई को चांदन प्रान्त में झाबरा गाँव के पास डेल्हाजी जसोड़ के प्राचीन स्मारक पर हवन, 9 जुलाई को मान गोतान चौक केकड़ी में। 16 जुलाई को भदेसर तहसील के करेड़िया, अजमेर जिले के खिरियाँ गाँव व वागड़ प्रांत के ठीकरिया गाँव में जन्म शताब्दी सम्बन्धी कार्यक्रम हुए। 23 जुलाई को अजमेर जिले के तेलाड़ा में, काकरिया गाँव में तथा कपासन क्षेत्र के भाटखेड़ा गाँव में कार्यक्रम आयोजित किए गये। 23 जुलाई को वीर जुंझार महेशदास जी जसोड़ का शौर्य दिवस मनाया तथा जन्मशताब्दी की जानकारी दी गई। 23 जुलाई को ही लाडनू प्रान्त के बेगसर, जयपुर सम्भाग के तामड़िया गाँव में, जैसलमेर जिले के धायसर गाँव में तथा बीकानेर सम्भाग के अनूपगढ़ में जन्म शताब्दी कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इसी श्रृंखला में मामड़ोदा (लाडनू) में स्नेह मिलन कार्यक्रम आयोजित हुआ।

गुरु पूर्णिमा :

3 जुलाई को गुरु पूर्णिमा मनाई गई। आलोक आश्रम बाड़मेर में गुरु पूर्णिमा का कार्यक्रम संरक्षक माननीय श्री भगवानसिंहजी के सान्निध्य में मनाया गया जिसमें स्थानीय सामाजिक बन्धु व मातृशक्ति की उपस्थिति रही। गुजरात से भी लगभग 75 महिला व पुरुष आलोक आश्रम पहुँचे। जयपुर में संघशक्ति कार्यालय में 3 जुलाई की शाम गुरु पूर्णिमा मनाई गई जिसमें स्वयंसेवक परिवार सहित पहुँचे।

गतांक से आगे

पूज्य श्री तनसिंहजी (के सम्बन्ध में)

''जो कुछ देखा, समझा व अनुभव किया''

– चैनसिंह बैठवास

पूज्य श्री तनसिंह जी अपनी जाति को, अपने समाज को माँ भगवती का स्वरूप मानते थे इसलिए अपनी जाति को समाज को भगवती स्वरूपा समझ कर जीवन भर उनकी सेवा व अर्चना में लीन रहे। दुर्गासप्तशती में भी जाति को माँ का रूप माना है। दुर्गासप्तशती में आता है–

या देवी सर्वभूतेषु जाति रूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

पूज्य श्री तनसिंह जी ने कहा –

''मुझे मेरी जाति ईश्वर से भी प्रिय है।''

पूज्य श्री को अपनी जाति (समाज) ईश्वर से भी अधिक प्रिय थी, पर यह जाति, यह क्षत्रिय समाज अपने सब गुण खोकर खोखला हो चुका था, अपनी विशिष्टता खो तमोगुण से आक्रान्त था। क्षत्रिय समाज की संजीवनी शक्ति क्षात्र शक्ति है जिसे वह विस्मृत कर चुका था। वह पथ विचलित व धर्मच्युत होकर गर्त में धंसता जा रहा था, न कुछ करने की हिम्मत थी, न जागृति और चेतना। समाज पतन की राह पर था। जागृति व चेतना के जो भी प्रयास हो रहे थे वे पर्याप्त नहीं थे। प्रयास नाकामयाबी रहने से निराशा ही हाथ लगी। पूज्य श्री तनसिंह जी से समाज की यह दुर्गति देखी नहीं गई। अपने समाज को दुर्दिनों से गुजरते देख वे व्यथित हो उठे। वे उनकी लड़खड़ाती जिन्दगी को पुनः पटरी पर लाना चाहते थे। उनके सम्बल बन कर उनकी सेवा करना चाहते थे पर यह सब बिना शक्ति सम्भव नहीं था। चारों ओर हताशा ही पसरी हुई थी। सहयोगी व सहायक कोई नहीं था।

पूज्य श्री तनसिंह जी ने विचार किया कि समाज की सेवा और अर्चना करनी है तो मुझे भौतिक, मानसिक व आध्यात्मिक बल को अपने में सृजित करना होगा। बिना बल के जो मैं करना चाहता हूँ, सम्भव नहीं है इसलिए उन्होंने माँ भगवती की शरण में जाने का दृढ निश्चय कर एक निर्जन पर्वत पर (जहाँ माँ भगवती का मंदिर ''वैर का थान है'') जा पहुँचे और माँ शक्ति की आराधना में लीन हो गये। माँ शक्ति की आराधना के दौरान पूज्य श्री तनसिंह जी ने माँ से कहा–

''जब मैं तेरी पूजा में बैठता था, तो तेरी मूर्ति को यथार्थ मानता था, बड़ी व्याकुलता से तेरा पूजन करता था। पाठ करते समय, तेरा वर्णन पढते हुए सहसा आँसू उमड़ पड़ते थे। मेरी व्याकुलता बढ रही थी, पर मैं चाहता था तुम दर्शन न दो, पर क्या चाहता था? केवल यही कि इस क्षत्रिय समाज की सेवा के लिए मुझे ज्योति प्रदान करो। क्या करूँ और क्या न करूँ, इसका मार्ग बता दो। तुमने मुझ में केवल मार्ग में अटूट विश्वास ही पैदा नहीं किया किन्तु बहुत कुछ आध्यात्मिक शक्तियाँ भी दी।''

माँ भगवती की कृपा बरसी। पूज्य श्री को ज्योति मिली, मार्ग मिला, उनमें नई शक्ति व चेतना का संचार हुआ। उनके जीवन में जब प्रभात का आगमन हुआ। एक नई प्रेरणा, नई उमंग और नये जोश के साथ समाज में आ धमके और क्षत्रिय बन्धुओं के संग सद्-पथ पर उनके कदम आगे बढ़ने लगे।

पूज्य श्री तनसिंह जी के जीवन में समाज के सिवाय और कुछ नहीं था। उनके लिए उनका समाज ही उनके जीवन में सर्वोपरी था, अति महत्त्वपूर्ण था, इसलिए वे समाज की प्रसन्नता के लिए, उनके जो भी स्वप्न थे उन्हें पूरा करने के लिए पूर्ण मनोयोग से समाज की सेवा, सुश्रूषा में लग गये और उन्होंने समाज की इस सेवा-सुश्रूषा को समाज की अर्चना व पूजा माना।

समाज से पूज्य की तनसिंह जी का अगाध प्रेम व गहरा सम्बन्ध था इसलिए समाज को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा–

''तुम्हारा शत्रु मेरा जानी दुश्मन है और तुम्हारा सेवक मेरा माता-पिता, बन्धु-सखा और सर्वस्व है। तुम से जो उदासीन है उससे मैं बात करना भी पसन्द नहीं करता। मैं भी उससे उदासीन हूँ। भरी सभाओं में बैठकर भी तेरा ही मनन करता हूँ। तेरा भक्त मेरा प्रभु है। क्या तुम यह नहीं जानते कि तुम्हारा सेवक है, उसे देखकर मेरा रोम-रोम कितनी प्रफुल्लता अनुभव करता है। उनके कुशल क्षेम पूछने और गप्पें लड़ाने में नींद को भी हरा देता हूँ।''

पूज्य श्री तनसिंह जी अपने समाज बन्धुओं व सहयोगियों से भी यही अपेक्षा करते थे कि वे उन्हीं की तरह अपने जीवन को समाज की सेवा में समर्पित कर दें। पूज्य श्रीतनसिंह जी ने कहा-

''मैंने अपने साथियों और सहयोगियों को भी अनेक बार समझाया है कि तुम मुझसे जो वस्तु चाहते हो, वह तुम्हें मिलेगी, बदले में मैं उनसे जो वस्तु चाहता हूँ वह मुझे मिले। मैं उनसे केवल एक ही वस्तु चाहता हूँ कि वे तुम्हारे (समाज के) लिए अपने जीवन के अन्तिम दिन तक, अपने शक्ति की अंतिम तड़प तक, अपने विचारों की अंतिम मान्यता तक और अपनी भौतिक उपलब्धियों के अंतिम संचय तक, वे तुम्हारी और केवल तुम्हारी सेवा के लिए कृत प्रयत्न हों।''

एक बच्चे के लिए माँ क्या होती है, उनके जीवन में माँ की क्या महत्ता होती है, वही बात पूज्य श्री तनसिंह जी के जीवन में समाज की थी। वे अपने समाज में माँ भगवती के दर्शन करते थे। अपने समाज को माँ भगवती का स्वरूप समझ कर समाज को सम्बोधित करते हुए पूज्य श्री ने कहा-

''मेरे समाज! तुम्हारी चरण वन्दना कर मैं तुम पर कोई उपकार नहीं कर रहा हूँ, मैं तो कृतार्थ होना चाहता हूँ। मेरा विद्याध्ययन, विवाह, नौकरी कुटुम्बपालन और जीवन के समस्त व्यापार केवल इसी लक्ष्य की ओर प्रेरित हैं। मैं तो सर्वात्मना तुम्हारी शरण में हूँ।''

पूज्य श्री स्वयं को इस समाज का सेवक, उपासक एवं भक्त मानते थे। समाज के प्रति अपने इस पूज्य भाव का प्रकटीकरण उन्होंने अपनी आत्मकथा व अपने साहित्य में जगह-जगह किया है। उन्होंने अपनी सेवा का कभी प्रदर्शन नहीं किया क्योंकि उनके द्वारा की जाने वाली सेवा किसी को दिखाने के लिए नहीं बल्कि स्वयं की आत्म संतुष्टि के लिए थी। उनके लिए समाज की सेवा ही पूजा है, भजन है, भक्ति है। वे अपने आपको इस गौरवपूर्ण समाज का भक्त मानते थे। उन्होंने अपनी भक्ति के बदले समाज से मिलने वाले सम्मान, प्रशंसा, फूल मालाओं को सदैव विनयपूर्वक नकारा है। ऐसी ही एक घटना नागौर जिले के डीडवाना कस्बे की है। डीडवाना राजपूत छात्रावास में एक समारोह रखा गया था। पूज्य श्री तनसिंह जी उस समारोह में आमंत्रित थे। वे श्री क्षत्रिय युवक संघ के संघ प्रमुख के रूप में पहली बार डीडवाना पधार रहे थे। छात्रावास प्रबंध समिति के अध्यक्ष ठाकुर साहब लाडनूं बालसिंह अपनी कार्यकारिणी सदस्यों, सहयोगियों सहित डीडवाना रेलवे स्टेशन पर मालाएँ लेकर पूज्य श्री तनसिंह जी की अगवानी करने पहुँचे। ठाकुर शंभूसिंह रोडू व ठाकुर गुलाबसिंह निंबी जोधा भी उनके साथ थे। रेलवे स्टेशन पर पूज्य श्री तनसिंह जी ने उन्हें देख लिया था। पूज्य श्री उन सबसे बचते हुए भीड़ में होकर पैदल ही छात्रावास पहुँच गए। उन सभी लोगों ने सोचा तनसिंह जी नहीं पधारे हैं, यह सोचकर वे भी छात्रावास आ गए। आगे छात्रावास में तनसिंह जी को देख कर उन सब ने उलाहना दिया कि हम सब उत्साह पूर्वक आपका स्वागत करने पहुँचे थे और आपने हमारी भावनाओं की बेकद्री की। पूज्य श्री तनसिंह जी ने विनय पूर्वक निवेदन किया कि मैं आप सबके स्नेह के सामने नतमस्तक हूँ, लेकिन आप सबसे स्वागत करवाने एवं फूल मालाएँ पहनने का मुझ में साहस नहीं है। मैं तो एक सेवक हूँ और सेवा में सम्मान कैसा, स्नेह की ही चाह रहती है। आप सब के स्नेह से मैं कृतार्थ हूँ। इस प्रकार पूज्य श्री ने विनयपूर्वक उनकी भावनाओं का सम्मान भी किया एवं सम्मान आदि के प्रदर्शन की परम्परा को नकार भी दिया। **(क्रमशः)**

जुलाई अंक से आगे

पृथ्वीराज चौहान

– विरेन्द्रसिंह मांडण (किनसरिया)

लम्बा संघर्ष पृथ्वीराज और चालुक्यों में टक्कर, 1183–86 ई भाग 1

एक सामरिक युद्ध की कोई भी परिभाषा रणभूमि पर मची मारकाट से कहीं आगे जाकर पूरी होती है और ठण्डे गरम चरणों से निकलते ये लम्बे खेल अच्छे-अच्छे खिलाड़ी को हाँफने पर विवश कर देते हैं। पाठकों से साझा आगे का वृतान्त कुछ ऐसा ही है।

यह 12वीं सदी के इतिहास का एक विचारणीय प्रश्न है कि पृथ्वीराज चौहान जैसे शक्तिशाली राजा चालुक्यों से मैत्री क्यों नहीं कर पाए, जबकि उनके पिता सोमेश्वर तो चालुक्यों से बहुत निकट थे?

कालचक्र की भांति सदा डोलते सिंहासनों पर भी यदि ठीक हस्तांतरण हो तो संस्कृति, सामरिक नीतियों और विचारधाराओं की भान्ति राजनैतिक अनुभव और ज्ञान आदि आगे प्रेषित किये जा सकते हैं। पर उसके लिए समय की मार झेल सकने वाला एक दृढ़ संस्थागत ढांचा होना आवश्यक है, जैसे कि इस्लाम और जनजातिवाद जिनमें से दूसरे ने उत्तर पश्चिम भारत में प्रभाव दिखाया।

पर समुचित संस्थागत आधार न होने से पनपे राजनैतिक विखंडन ने कृषि आधारित हिन्दू भारत की स्थायी सभ्यता में विश्व के अन्य क्षेत्रों व सभ्यताओं की अपेक्षा अधिक हानि की। इस शून्य ने हमारे नेतृत्व की निजी महत्त्वाकांक्षाओं व पूर्वाग्रह को खुला छोड़ दिया। परिणाम इस्लाम की पसरती छाया के बीच मध्ययुगीन भारतीय सभ्यता की दीर्घकालीन दृष्टि के विकास में बाधा उत्पन्न हो गई।

इस परिप्रेक्ष्य में प्रतिहार साम्राज्य के पतन से ही चौहानों व चौलुक्यों का परस्पर संघर्ष चला आ रहा था। उसके कारणों में जाना तो आवश्यक नहीं क्योंकि क्षत्रिय तो युद्ध की प्रेरणा कहीं न कहीं से ले ही लेते हैं। पर पृथ्वीराज से ठीक पहले की स्थिति देखें।

पाठकों को युवा सोमेश्वर की पृष्ठभूमि याद होगी कि कुमारपाल चालुक्य तक उनके चालुक्यों से सम्बन्ध कितने मधुर थे।

कारण जो एक राज-विवाह[1]

पर अजमेर-पाटन के राजनैतिक समीकरण सोमेश्वर के जीवित रहते ही बिगड़ गए। उस समय अजमेर चौहान राजपरिवार का जुड़ाव तत्कालीन चौलुक्य राजपरिवार से था। कुमारपाल के बाद 1172-73 ई में अजयपाल चालुक्य न केवल बल से सिंहासन पर बैठे अपितु राज्य की नीतियों में भी आमूलचूल परिवर्तन कर दिए। अजयपाल और उनकी नीतियाँ दोनों ही अजमेर चौहान परिवार को नहीं सुहाए। आचार्य मेरुतुंग ने तो सोमेश्वर अजयपाल का युद्ध तक बखान कर दिया जहाँ अजयपाल ने सोमेश्वर को बुरी तरह परास्त किया।[2] इसकी पुष्टि अन्य किसी स्रोत से नहीं होती पर मन-मुटाव तो निश्चित ही व्याप्त था। अजयपाल चालुक्य की पत्नी नायिकी देवी जेजाकभुक्ति परमार्दि चंदेल की पुत्री थीं[3] इस विवाह से सन्ततिः रूप में मूलराज चालुक्य द्वितीय और भीमदेव चालुक्य हुए जो कि पृथ्वीराज चौहान के समकालीन थे।

पृथ्वीराज के जेजाकभुक्ति अभियान से अपने पिता को प्रताड़ित होते देख चौहानों के प्रति नायिकीदेवी के मन में बल पड़ गए। पर पृथ्वीराज का जेजाकभुक्ति राज्य को नहीं गटक जाना नायिकी देवी को चौहानों के विरुद्ध बड़ा निर्णय लेने से रोक देता था।

उस जेजाकभुक्ति अभियान के कोई विशेष उत्प्रेरक थे या बस राज्य विस्तार, दंड धनार्जन, श्रेष्ठता सिद्ध करने आदि का एक प्रयास था। यह तो काल के गर्भ से कभी निकले इसकी सम्भावना क्षीण है पर इतना अवश्य कहा जा सकता है कि पृथ्वीराज की माता कर्पूरीदेवी कल्चुरी राजकन्या थीं और कल्चुरियों को पिछले कुछ समय में चन्देलों द्वारा बहुत हानि पहुंचाई गई थी।

भारत के भू-सामरिक परिदृश्य की विशेषता रही है कि यहाँ राजनीति की चट्टानें खिसकना राजमहलों के निजी प्रासाद में आरम्भ होता है।

धरातल पर परिस्थिति बदलने में राजपरिवारों के राजनैतिक विवाह एक शक्तिशाली भूमिका निभाते हैं। इन विवाहों ने शत्रुता को मैत्री में, बिगड़े हुए संबंधों को अनुवांशिक कट्टर शत्रुता में बदला है और कई बार ऐसे विवाह बड़े परिवर्तनकारी दावानल का बीज बनते देखे गए हैं।

हमारे प्रिय ग्रन्थ रासो अनुसार ऐसा एक राज विवाह आबू (चंद्रावती?) के शासक सलष (सलख) परमार ने अपनी पुत्री इच्छिनी का विवाह पृथ्वीराज चौहान से तय किया। पर पाटन गुजरात के चालुक्य राजकुमार भीमदेव द्वितीय इच्छिनी से विवाह के इच्छुक थे। उन्होंने परमार राजा को धमकी भरा सन्देश भिजवाया कि इच्छिनी मुझे न मिली तो परिणाम बुरे होंगे। परमार इस धमकी पर झुके नहीं और पृथ्वीराज को भी सूचना पहुँचा दी[4]। उधर भीमदेव ने गुट बनाते हुए गोरी को अपने साथ मिलाया। फिर क्या था, भीमदेव-गोरी के आबू के निकट पहुँचते ही दोनों पक्ष उलझ पड़े। युद्ध में पृथ्वीराज परमार गठबंधन विजयी रहा भीम रणक्षेत्र से भाग गए और गोरी बंदी बना लिया गया जिसे दण्ड स्वरूप बड़ी धनराशि वसूलने के बाद छोड़ दिया गया[5]। रासो आगे बताता है कि भीमदेव ने छद्म युद्ध छेड़ते हुए चौहानों के प्रधानमंत्री कदम्बवास को बहुत-सा धन और एक सुन्दर वेश्या देकर अपनी ओर मिला लिया। बाद में रासो के रचयिता चंद के समझाने पर कदम्बवास को भूल का आभास हुआ और दोनों ने मिलकर फिर से चालुक्य सेना को परास्त किया। इस बार युद्धस्थल नागौर था जो कि रासो अनुसार तब चालुक्यों के अधीन था[6]।

कहानी तो बहुत आकर्षक है! पर सत्य है कि इसके खलनायक भीमदेव 1177 ई. में पृथ्वीराज के राज्याभिषेक के समय शैशवावस्था से अभी निकले एक छोटे बालक थे[7]। भीमदेव ने 1178 ई. में बड़े भाई की मृत्यु से असमय सिंहासन पर आने से लेकर 1239 ई. तक राज किया यह पहले ही शिलालेखों से सिद्ध है[8]। ऐसे में 1183 ई. के आसपास 9-10 वर्षीय भीमदेव कैसे किसी राजकुमारी से विवाह के लिये धमकी भरा सन्देश भेज रहे हैं और गोरी से सांठगांठ कर युद्ध भी कर रहे हैं?

आइये समयवार हम समकालीन साक्ष्यों द्वारा रासो से बेहतर एक रूपरेखा खींचें :

1. गोरी पर 1182-83 ई. की अपनी गौरवशाली विजय से उत्साहित पृथ्वीराज ने स्वाभाविक है कि शीघ्र ही अन्य दिशाओं में भी आक्रमण किए होंगे। इस प्रक्रिया में सबसे पहला साक्ष्य मिलता है पृथ्वीराज का आबू (चंद्रावती) के परमारों पर आक्रमण[9]। स्थानीय परमार शाखा तब राजा धारावर्ष के नेतृत्व में थी और चौलुक्यों की आधीनता में थी। ये चौलुक्य गठबंधन पर पृथ्वीराज का पहला ज्ञात आक्रमण था। चौलुक्य राजमाता नायकीदेवी तो पहले से अजमेर के चौहानों पर खार खाए एक अवसर की प्रतीक्षा में बैठी थी। पृथ्वीराज के आबू राज्य पर रात में किए आक्रमण को तो धारावर्ष ने विफल कर दिया। पर अब नायकीदेवी के झिझकने का समय जा चुका था। ●

उद्धरण :- 1. अर्णोराज-काञ्चनदेवी का विवाह, कीर्ति कौमुदी, अध्याय 2 श्लोक 28, 2. प्रबंध चिंतामणि, सिंघी जैन ग्रंथमाला, पृष्ठ 96, 3. वही, पृष्ठ 119 इस विषय में साक्ष्यों में वांछित स्पष्टता नहीं है पर उपलब्ध जानकारी और परिस्थितिजन्य साक्ष्यों से हमें पर्याप्त अनुमान मिल जाता है, 4. पृथ्वीराज रासो लघु संस्करण, अध्याय 4, छंद 4, 5. वही, अध्याय 4, छंद 5-9, 6. वही, अध्याय 5, छंद 5-8, 7. कीर्ति कौमुदी, अध्याय 2, श्लोक 59-61, 8. वर्धिपथक दानपत्र 1239 ई, इंडियन एंटीक्वेरी खंड 6, पृष्ठ 205-06; चौलुक्याज ऑफ़ गुजरात ए के मजूमदार, पृष्ठ 141, 9. प्रहलादनदेव परमार कृत पार्थ पराक्रम व्यायोग, बड़ौदा सरकार पुस्तकालय प्रकाशन, प्रस्तावना पृष्ठ 2 का पादलेख व्यायोग का अर्थ है किसी सैन्य घटनाक्रम का नाटकीय लहजे में वर्णन।

(शेष अगले अंक में)

गतांक से आगे

जन्म कर्म च मे नित्यम्

– जयदयाल जी गोयन्दका

तत्त्व को न जानने के कारण ही लोग भगवान का अपमान भी किया करते हैं और भगवान की शक्ति-सामर्थ्य की सीमा बाँधते हुए कह देते हैं कि विज्ञानानन्दघन निराकार परमात्मा साकार रूप से प्रकट हो ही नहीं सकते। वे साक्षात् परमेश्वर भगवान श्रीकृष्ण को परमात्मा न मानकर एक मनुष्य विशेष मानते हैं, भगवान के सम्बन्ध में इस प्रकार की धारणा करनी किसी चक्रवर्ती विश्व-सम्राट को एक साधारण ताल्लुकेदार मानकर उसका अपमान करने की भाँति ईश्वर की अवज्ञा या उनका अपमान करना है । भगवान ने गीता में कहा भी है-

अवजानन्ति मां मूढ़ा मानुषीं तनुमाश्रितम्।
परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्।।

(9/11)

'सम्पूर्ण भूतों के महान् ईश्वर रूप मेरे परमभाव को न जानने वाले मूढ़ लोग, मनुष्य का शरीर धारण करने वाले मुझ परमात्मा को तुच्छ समझते हैं अर्थात् अपनी योगमाया से संसार के उद्धार के लिये मनुष्य रूप में विचरते हुए मुझको साधारण मनुष्य मानते हैं।'

इससे यह बात सिद्ध हो गयी कि निराकार सर्वव्यापी भगवान जीवों के ऊपर दया करके धर्म की संस्थापना के लिये दिव्य साकार-रूप से समय-समय पर अवतरित होते हैं। इस प्रकार शुद्ध सच्चिदानन्द निराकार परमात्मा के दिव्य गुणों के सहित प्रकट होने के तत्त्व को जो जानता है वही पुरुष उस परमात्मा की दया से परमगति को प्राप्त होता है।

जिस प्रकार भगवान के जन्म की अलौकिकता है उसी प्रकार भगवान के कर्मों की भी अलौकिकता है। इसलिये भगवान के कर्मों की दिव्यता जानने से पुरुष परम पद को प्राप्त हो जाता है। भगवान के कर्मों में क्या दिव्यता है, उसका जानना क्या और जानने से मुक्ति कैसे होती है, इस विषय में कुछ लिखा जाता है। भगवान के कर्मों में अहैतुका दया, समता, स्वतन्त्रता, उदारता, दक्षता और प्रेम आदि गुण भरे रहने के कारण मनुष्यों की तो बात ही क्या, सिद्ध योगियों की अपेक्षा भी उनके कर्मों में अत्यन्त विलक्षणता होती है। वे सर्वशक्तिमान, सर्वसामर्थ्यवान, असम्भव को भी सम्भव कर देने वाले होने पर भी न्याय विरुद्ध कोई कार्य नहीं करते, उन विज्ञानानन्दघन भगवान श्रीकृष्ण ने सर्वभूत प्राणियों पर परम दया करके धर्म की स्थापना और जीवों का कल्याण किया। उनकी प्रत्येक क्रिया में प्रेम एवं दक्षता, निष्कामता और दया परिपूर्ण है। जब भगवान वृन्दावन में थे, तब उनकी बाल लीला की प्रत्येक प्रेममयी क्रिया को देखकर गोपियाँ मुग्ध हो जाया करती थीं। भगवान श्रीकृष्ण के तत्त्व को जानने वाले जितने भी स्त्री-पुरुष थे, उनमें कोई एक भी ऐसा नहीं था जो उनकी प्रेममयी लीला को देखकर मुग्ध न हो गया हो। उनकी मुरली की तान को सुनकर मनुष्य तो क्या पशु-पक्षी तक मुग्ध हो जाते थे। उनके शरीर और वाणी की चेष्टाएँ ऐसी अद्भुत थीं, जिनका किसी मनुष्य में होना असम्भव है। प्रौढ़ अवस्था में भी उनके कर्मों की विलक्षणता को देखकर उनके तत्त्व को जानने वाले प्रेमी भक्त पद-पद पर मुग्ध हुआ करते थे। अर्जुन तो उनके कर्म और आचरणों पर तथा हाव-भाव चेष्टा को देख-देखकर इतना मुग्ध हो गया था कि वह सदा उनके इशारे पर कठपुतली की भाँति कर्म करने के लिये तैयार रहता था।

भगवान के लिये कोई कर्तव्य न होने पर भी वे केवल जीवों को सन्मार्ग में लगाने के लिये ही कर्म किया करते हैं। गीता में भगवान ने स्वयं कहा है –

न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किंचन।
नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मुणि।।

(3/22)

'हे अर्जुन! यद्यपि मुझे तीनों लोकों में कुछ भी

कर्तव्य नहीं है तथा किञ्चित् भी प्राप्त होने योग्य वस्तु अप्राप्त नहीं है तो भी मैं कर्म में ही बर्तता हूँ।'

भगवान को समता भी बड़ी प्रिय है। इसलिये गीता में भी उन्होंने समता का वर्णन किया है-

सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु ।
साधुष्वपि च पापेषु समबुद्धिर्विशिष्यते।। (6/39)

'सुहृद्, मित्र, वैरी, उदासीन, मध्यस्थ, द्वेषी और बन्धुगणों में तथा धर्मात्माओं में और पापियों में भी जो समान भाव वाला है वह अतिश्रेष्ठ है।'

गीता में केवल कहा ही नहीं, अपितु काम पड़ने पर भगवान ने अपने मित्र और वैरियों के साथ बर्ताव भी समता का ही किया। महाभारत-युद्ध के प्रारम्भ में दुर्योधन और अर्जुन युद्ध के लिये मदद माँगने द्वारिका गये और दोनों ही ने भगवान से युद्ध में सहायता की प्रार्थना की। भगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि एक ओर मेरी एक अक्षौहिणी नारायणी सेना है और दूसरी ओर मैं अकेला हूँ, पर मैं युद्ध में हथियार नहीं लूँगा। इससे यह बात सिद्ध हुई कि भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन और दुर्योधन दोनों के साथ समान व्यवहार किया। यहाँ यह विचारणीय विषय है कि भगवान श्रीकृष्ण को अर्जुन कितना अधिक प्रिय था, वे कहने को ही दो शरीर थे। महाभारत मौसलपर्व में वासुदेव जी अर्जुन से कहने लगे

योऽहं तमर्जुनं विद्धि योऽर्जुनः सोऽहमेव तु।
यद्ब्रुयात्तत्तथा कार्यमिति बुध्यस्व भारत।।

(6/21-22)

'हे अर्जुन ! तू समझ, श्रीकृष्ण ने मुझे कहा-'जो मैं हूँ सो अर्जुन है और जो अर्जुन है सो मैं हूँ, वह जैसा कहें, आप वैसा ही कीजियेगा।'

तथा श्रीमद्भगवद्गीता में भी भगवान ने कहा है-

भक्तोऽसि मे सखा चेति रहस्यं ह्येतदुत्तमम्।। (4/3)

इतना होते हुए भी वे अपने प्रिय सखा अर्जुन के विपक्ष में लड़ने वाले उसके शत्रु दुर्योधन को भी समानभाव से सहायता करने को तैयार हो गये। जो अपने मित्र का शत्रु होता है वह अपना शत्रु ही समझा जाता है। महाभारत उद्योगपर्व में भगवान श्रीकृष्ण जब संधि कराने गये तब उन्होंने स्वयं यह कहा भी था -

यस्तान्द्वेष्टि स मां द्वेष्टि यस्ताननु स मामनु।
ऐकात्म्यं मां गतं विद्धि पाण्डवैर्धर्मचारिभिः।।

(91/28)

जो पाण्डवों का वैरी है, वह मेरा वैरी है और जो उनके अनुकूल है वह मेरे अनुकूल है। मैं धर्मात्मा पाण्डवों से अलग नहीं हूँ। ऐसा होने पर भी भगवान ने दुर्योधन की सैन्यबल से सहायता की। संसार में ऐसा कौन पुरुष होगा, जो अपने प्रेमी मित्र के शत्रु को उसी से युद्ध करने के कार्य में सहायता दे। परन्तु भगवान की समता का कार्य विलक्षण था। इस मदद को पाकर दुर्योधन भी अपने को कृतकृत्य मानने लगा। और उसने ऐसा समझा कि मानो मैंने श्रीकृष्ण को ठग लिया-

कृष्णं चापहृतं ज्ञात्वा सम्प्राप परमां मुदम्।
दुर्योधनस्तु तत्सैन्यं सर्वमादाय पार्थिवः।।

(उद्योगपर्व 7/24)

भगवान श्रीकृष्ण के प्रभाव को दुर्योधन नहीं जानता था, इसीलिये उसने इसमें उनकी उदारता और समता तथा महत्ता का तत्त्व न जानकर इसे मुर्खता समझा। जो लोग महान पुरुषों के प्रभाव को नहीं जानते, उनको उन महापुरुषों की क्रियाओं के अन्दर दया, समता एवं उदारता आदि गुण दृष्टिगोचर नहीं होते। दुर्योधन के उदाहरण से यह बात प्रत्यक्ष प्रमाणित होती है।

भगवान श्रीकृष्ण जो कुछ भी करते थे, सबके अन्दर समता, निःस्वार्थता, अनासक्तता आदि भाव पूर्ण रहते थे, इसी से वे कर्मों के द्वारा कभी लिपायमान नहीं होते थे। गीता में उन्होंने कहा भी है-

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।
तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम्।।
न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्पृहा।
इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते।।

(4/13-14)

'हे अर्जुन! गुण और कर्मों के विभाग से ब्राह्मण,

क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र मेरे द्वारा रचे गये हैं, उनके कर्ता को भी मुझ अविनाशी स्पृहा परमेश्वर को तू अकर्ता ही जान। क्योंकि कर्मों के फल में मेरी स्पृहा नहीं है, इसलिये मुझको कर्म लिपायमान नहीं करते। इस प्रकार जो मुझको तत्त्व से जानता है वह भी कर्मों से नहीं बंधता।' तथा-

न च मां तानि कर्माणि निबध्नन्ति धनंजय।
उदासीनवदासीनमसक्तं तेष कर्मसु।।

(9/9)

'हे अर्जुन! उन कर्मों में आसक्तिरहित और उदासीन के सदृश स्थित हुए मुझ परमात्मा को वे कर्म नहीं बाँधते।'

भगवान की तो बात ही क्या है, तत्त्व को जानने वाला पुरुष भी कर्मों में लिपायमान नहीं होता। अब यह बात समझने की है कि उपर्युक्त श्लोकों के तत्त्व को जानना क्या है? वह यही है कि भगवान श्रीकृष्ण को कर्मों में आसक्ति, विषमता और फल की इच्छा नहीं रहती थी। जो मनुष्य यह समझकर कि कर्मों में आसक्ति, फलकी इच्छा एवं विषमता ही बन्धन के हेतु हैं इन दोषों को त्याग कर अहंकाररहित होकर कर्म करता है, वही कर्मों के तत्त्व को जानकर कर्म करता है। इस प्रकार कर्म के तत्त्व को जानकर कर्म करने वाला कर्म के द्वारा नहीं बँधता। ऐसा समझकर जो स्वयं इन दोषों को त्यागकर कर्म करता है वही इस तत्त्व को समझता है। जैसे सँखिया, पारा आदि के दोषों को मारकर उनका सेवन करने वाले को हानि की जगह परम लाभ पहुँचता है, इसी प्रकार विषमता, अभिमान, फल की इच्छा और आसक्ति को त्याग कर कर्मों का सेवन करने वाला मनुष्य उनसे न बँधकर मुक्ति को प्राप्त होता है।

दूध में विष मिला हुआ है, यह जानकर कोई भी मनुष्य उस दूध का पान नहीं करता है । यदि करता है तो उसे अत्यन्त मूढ़ समझना चाहिये। इसी प्रकार कर्मों में आसक्ति, कर्तृत्व-अभिमान, फल की इच्छा और विषमता आदि रोग विष से भी अधिक विष होकर मनुष्य को बार-बार मृत्यु के चक्कर में डालने वाले हैं। जो पुरुष इस प्रकार समझता है वह उपर्युक्त दोषों से युक्त होकर कभी कर्म नहीं करता।

भगवान श्रीकृष्ण के कर्मों में और भी अनेक विचित्रताएँ हैं। जिनको हम नहीं जान सकते और जो यत्किञ्चित जानते हैं उसको भी समझाना बहुत कठिन है। हम तो चीज ही क्या हैं, भगवान की लीलाओं को देखकर ऋषि, मुनि और देवतागण भी मोहित हो जाया करते थे। श्रीमद्भागवत में लिखा है कि एक समय श्रीकृष्ण चन्द्रजी की लीलाओं को देखकर ब्रह्माजी को भी मोह हो गया था, उन्होंने ग्वालबालों के सहित बछड़ों को ले जाकर एक कन्दरा में रख दिया। महाराज श्रीकृष्ण चन्द्रजी ने यह जानकर तुरन्त वैसे ही दूसरे ग्वालबाल और बछड़े रच लिये और गौओं तथा गोपियों आदि किसी को यह मालूम नहीं हुआ कि यह बालक तथा बछड़े दूसरे ही हैं।

वास्तव में ब्रह्माजी जैसे महान देव ईश्वर के विषय में मोहित हो जायें, यह बात युक्ति से सम्भव नहीं मालूम होती, किन्तु ईश्वर के लिये कोई बात भी असम्भव नहीं है। वे असम्भव को भी सम्भव करके दिखा सकते हैं । विचारने की बात है कि इस प्रकार के अलौकिक तथा अद्भुत कर्म साधारण मनुष्य की तो बात ही क्या है योगी लोग भी नहीं कर सकते ।

परमात्मा के जन्म और कर्म की दिव्यता की विषय बड़ा अलौकिक और रहस्यमय है। अर्जुन भगवान का अत्यन्त प्रिय सखा था; इसीलिये भगवान ने यह अत्यन्त गोपनीय रहस्य अर्जुन के प्रति कहा था।

इस प्रकार भगवान के जन्म और कर्म को दिव्यता को जो तत्त्व से जानता है वही भगवान को तत्त्व से जानता है। अतएव हम सबको इसके तत्त्व को समझने की कोशिश करनी चाहिये। जो पुरुष इस तत्त्व को जितना ही अधिक समझेगा, वह उतना ही आनन्द में मुग्ध होता हुआ परमात्मा के नजदीक पहुँचेगा। उसके कर्मों में भी अलौकिकता भासने लगेगी और वह भगवान के प्रभाव को जानकर प्रेम में मुग्ध हो शीघ्र ही परमगति को प्राप्त हो जाएगा।

हिन्दू संस्कृति : मर्यादा के दृष्टिकोण से

– गुमानसिंह धमोरा

हिन्दू संस्कृति में माताएँ विदा होते पुत्र के तिलक लगाकर दही पिलाती थीं बुरी आशंकाओं के निवारण के लिये व सावधानियों की सीख व शुभकामनाओं की आशीष देकर विदा करती थी। विदा होते पति का साजो सामान सजाकर, भावी आशंका को हृदय में छिपाकर उसे विदा करती थी और जाते पुत्र अथवा पति की पीठ को तब तक खड़ी निहारती थी जब तक कि वह दृष्टि से ओझल न हो जाये व इस कामना के साथ कि जैसे मैंने आज जाते हुओं की पीठ देखी है वैसे ही उन्हें आते हुए उनका चेहरा देखूं।

उपरोक्त दृश्य आपको हिन्दू संस्कृति में देखने को आज भी जगह-जगह मिलता है जो अन्य सभ्यताओं में कहीं नहीं मिलता। ऐसी शाश्वत, दीर्घकालीन व पुरातन सभ्यता को तिलांजलि देकर, गौण मानकर, क्षणिक व लालच भरी पश्चिमी सभ्यता को आधुनिक सभ्यता मानकर आधुनिक बनने के चक्कर में खासकर नई पीढ़ी को इसे अपनाने का भूत सवार हुआ है-शर्म की बात है।

इस आधुनिक संस्कृति व सभ्यता के अन्तर्गत उचित कपड़ों का त्याग कर कम से कम वस्त्र पहन अंग-प्रदर्शन करना, जगह-जगह से फटी जीन्स पहनना, किशोरों द्वारा बालों की विचित्र तरीके की कटिंग करवाना, आधुनिकता का प्रयाय बन गया है। और ऊपर से कुतर्क देना कि ''मेरा शरीर इसे मैं चाहे जैसे उपयोग करूँ, इसे गलत दृष्टि से घूरना पुरुष अथवा दूसरे की मानसिक दुर्बलता है।'' लेकिन ऐसा कुतर्क देने वाली पीढ़ी यह क्यों नहीं समझती कि नई चीज को विस्फारित दृष्टि से एक टक ही प्राय: देखा जाता है। जन्तुआलय में कोई नया जानवर जो भारत में नहीं पाया जाता, विदेशी है, जिराफ-कंगारू आदि उन्हें लोग बार-बार आश्चर्य चकित होकर एक टक ही तो देखते हैं।

एक दिन की बात है मैं मेरे मित्र से मिलने गया जिनके बड़ी-सी फलों के जूस की दुकान है। वहाँ टेबल पर एक सभ्रान्त महिला के साथ एक 18-20 वर्ष की युवा लड़की बैठी जूस पी रही थी। औरत शालीन राजपूती पौशाक में थी। आधुनिक लड़की टाइट निक्कर व ब्लाउज जैसा कुछ पहने थी (उस आडम्बर को मुझे ब्लाउज न कहकर ब्रा ही कहना चाहिए) उसके उरोज बाहर प्रदर्शन कर रहे थे और ढके आधे बाहर आने को उतावले हो रहे थे। देखा तो आश्चर्यचकित हो गया। उसके चेहरे पर शिकन न होकर प्रसन्नता के भाव थे व इधर-उधर देखकर जूस पीते हुए बातों में मशगूल थी। स्वाभाविक है अजूबा देखकर नजर तो उधर जाती ही है। आखिरकार मुझे ही शर्म महसूस हुई और नीचे धरती की तरफ देखने लगा। और भी बाजार में ऐसे दृश्य देखने को मिल जायेंगे। स्किन कलर के पतले स्लेक्स, जिन्हें देखकर आप अन्दाज नहीं लगा सकते कि वह कपड़े पहने हुये है अथवा....। कोई समाज शास्त्री बताये कि इस अंग प्रदर्शन का आशय क्या है व किस उद्देश्य को लेकर ऐसा किया जाता है। बच्चों को लॉलीपॉप दिखाकर अपहरण करना अगर गलत है तो अंग दिखाकर पुरुष वर्ग की नैतिकता का हरण भी सरासर गलत है।

मानव मन लालची है। इच्छा न होते हुये व पराया माल होते हुये भी रसगुल्ले देख मुँह में पानी आना स्वाभाविक है, यह मानव मन की कमजोरी है जो ईश्वर प्रदत है। हमारे घर में सोने के गहने भी थोड़े बहुत हरेक

(शेष पृष्ठ 18 पर)

गतांक से आगे

महान क्रान्तिकारी राव गोपालसिंह खरवा

– भँवरसिंह मांडासी

कश्मीर में मुस्लिम विद्रोह राजस्थान केशरी राव गोपाल सिंह कश्मीर में

सन् 1931 में पहली बार शेख मोहम्मद अब्दुल्ला ने कश्मीर का बादशाह बनने का स्वप्न देखा। वहाँ के बहुसंख्यक मुसलमानों के धार्मिक उन्माद को भड़काकर उसने कश्मीर के क्षत्रिय महाराजा के विरुद्ध विद्रोह का झण्डा उठा लिया। देश के अन्य भागों से भी मजहबी जोश में उन्मत्त मुसलमान जिहाद के नाम पर कश्मीर पहुँचने लगे। उनके धार्मिक उन्माद की प्रतिक्रिया स्वाभाविक थी। हिन्दुओं के जत्थे भी उक्त विद्रोह के विरुद्ध कश्मीर के महाराजा की मदद पर पहुँचने लगे। हिन्दू राष्ट्रीयता के समर्थक राव गोपालसिंह भी अपने आत्मत्यागी जत्थे के साथ कश्मीर के लिए चल पड़े। आजकल के सत्याग्रहियों एवं आन्दोलनकारियों की भाँति जेल जाने और राजनैतिक कैदियों की सुविधा प्राप्त करने हेतु नहीं, किन्तु केशरिया बाना पहिने शस्त्रों से सुसज्जित अपने बलिदानी साथियों के साथ वे कश्मीर की भूमि पर क्षत्रिय महाराजा की सहायतार्थ प्राणों की बलि देने के इरादे से गए थे। उस समय के 60 वर्ष के वृद्ध थे, किन्तु जोश में जवानों से आगे थे। सलेमाबाद मन्दिर के घेरे के पश्चात एक महत् उद्देश्य हेतु रण-मरण का उनका यह दूसरा प्रयास था। खरवा और अजमेर से 32 साथियों का दल उनके साथ कश्मीर के लिए रवाना हुआ था। राव गोपालसिंह के लाहौर पहुँचने पर पंजाब के गवर्नर ने उनके इरादे की सूचना पाकर उनके कश्मीर जाने पर पाबन्दी लगा दी। पंजाब की देशी रियासतों के पोलिटिकल एजेन्ट फिट्न पेट्रिक (J.A.O. Fitz-Petric) ने जो पहले अजमेर का कमिश्नर रह चुका था, राव गोपालसिंह को बताया कि कश्मीर का आन्दोलन दबा दिया गया है। वहाँ अब शान्ति है। अब आप वहाँ न आएँ, वरना व्यर्थ में अशान्ति उत्पन्न होने की स्थिति पुनः हो सकती है। तब राव गोपालसिंह लाहौर ही रुक गये। लाहौर के हिन्दू- सिक्ख और आर्यसमाजी बन्धुओं ने राव गोपालसिंह का हार्दिक स्वागत किया। ''हिन्दु-सिक्ख हितकारिणी सभा'' का उन्हें सभापति बनाया गया। 25 दिसम्बर, 1931 ई. को सभा का अधिवेशन शुरू हुआ, जिसकी बैठकें तीन दिन तक चलती रही। कश्मीर में हिन्दू और सिक्खों के हितों के संरक्षण एवं देखभाल के लिए एक कार्यकारिणी कमेटी का निर्माण किया गया, जिसके प्रमुख सदस्य पंजाब के प्रसिद्ध नेता भाई परमानन्द, डॉ. गोकुलचन्द नारंग और लोकप्रिय सिक्ख नेता मास्टर तारासिंह थे। पन्द्रह दिनों तक लाहौर में रहकर राव गोपालसिंह खरवा लौट आये। राजस्थान प्रांतीय हिन्दू सभा ने राव गोपालसिंह के उक्त साहसिक कार्य का सम्मान करते हुए उन्हें ''राजस्थान केशरी'' की उपाधि से अलंकृत किया था।

राव गोपालसिंह और मौलाना शौकत अली आमने-सामने

सन् 1921 ई. तक राव साहब और मौलाना शौकत अली दोनों ही कांग्रेस में थे। मौलाना के बड़े भाई मोहम्मद अली भी तब कांग्रेसी ही थे। अली बन्धुओं के नाम से उनकी ख्याति थी। राव गोपाल सिंह और शौकत अली वीरवृति होने से पगड़ी बदल भाई बन बैठे थे। राव गोपालसिंह की राजपूती पगड़ी मौलाना ने अपने सिर पर रखी और चाँद-सितारे वाली टर्की टोपी अपने सिर से उतार कर राव साहब के माथे पर धर दी। मुगलकालीन इतिहास में भी ऐसे अनेक प्रेरक प्रसंग पाए जाते हैं।

कांग्रेस में गाँधीवादी विचारधारा के प्रवेश के साथ ही राव गोपालसिंह और मौलाना कांग्रेस से अलग हो गए। किन्तु तब दोनों की दिशाएँ विपरीत थीं। राव गोपाल सिंह हिन्दू सभा की तरफ उन्मुख हुए तो मौलाना मुस्लिम-लीग के कट्टर अनुयायी बन बैठे। मौलाना पहले राव साहब के जितने प्रशंसक थे बाद में उतने ही कटु आलोचक बन गए। बम्बई की एक सभा में भाषण करते हुए उन्होंने कहा-''राव साहब गोपाल सिंह राठौड़ राणा प्रताप की जंग भरी तलवार अब भी दिखलाते हैं।'' लाहौर में आयोजित हिन्दु-सिक्ख हितकारिणी सभा की बैठक (27.12.31) में भाषण करते हुए राव गोपालसिंह ने मौलाना के उपरोक्त कथन का युक्ति-युक्त उत्तर दिया था। उन्होंने कहा था-''मेरा यह शरीर उसी खून का बना हुआ है, जिससे राणा प्रताप का बना था। तो मैं उनकी तलवार दिखाऊँ तो नई बात क्या है? किन्तु भाई साहब आप तो बगदाद की तलवार और लंकाशायर के कारखानों का प्रभाव हिन्दुस्थान में दिखलाना चाहते हैं। मैं हमेशा हिन्दू-मुस्लिम एकता का हामी रहा हूँ, परन्तु आप लोगों के साम्प्रदायिक जुनून की प्रतिक्रिया तो होगी ही।''

महाराज सूरतसिंह की मदद

मेवाड़ के महाराणा फतेहसिंह के नजदीकी बन्धुओं में महाराज सूरतसिंह भी एक थे। वे प्राय: अजमेर में निवास करते थे। उनका दिमागी पुरजा कुछ ढीला था। एक बार उनको रुपयों की जरूरत हुई । उदयपुर से समय पर रुपये आने में कुछ देर हुई। महाराज ने अपनी आवश्यकता की पूर्ति हेतु सरकार के इम्पीरियल बैंक को ही उपयुक्त समझा। अजमेर के सेठ, साहूकारों अथवा अन्य धनिक व्यक्तियों से रुपया माँगना अथवा जबरन छीनना मेवाड़ के महाराणा के छोटे भाई के लिए शोभनीय कार्य नहीं था। इम्पीरियल बैंक अंग्रेज सरकार की सम्पत्ति थी। वहाँ से जबरन रुपया उठा लाना कमजोरी की बात न होकर हिम्मत की बात मानी जावेगी। ऐसा ही कुछ सोच समझकर वे महानुभाव अपने दो चार साथियों के साथ इम्पीरियल बैंक पहुँचे। बाबू लोगों को डरा-धमका कर अपनी आवश्यकतानुसार कलदार रुपयों की दो थैलियाँ उठाकर चलते बने। हो हल्ला हुआ, पुलिस पीछे लगी। कमिश्नर को फोन पर खबर दी गई। अंग्रेज पुलिस सुपरिन्टेण्डेन्ट ने महाराज को समझा-बुझाकर मय रुपयों की थैलियों के पुलिस के घेरे में ले लिया और कोर्ट में ले गए। राव गोपालसिंह उस समय खरवा भवन में अजमेर में ही रह रहे थे। दोपहर का समय था, विश्राम कर रहे थे। उनको जगाकर सारे समाचारों से अवगत कराया। राम बहादुर मिठनलाल (वकील) को कोर्ट भेजकर राव साहब खुद ए.जी.जी. से मिलने गये और सारे हालात उन्हें बताये। ए.जी.जी. ने कमिश्नर को फोन पर कुछ कहा और अदालत में राय बहादुर मिठनलाल ने पैरवी की। कोर्ट उठने तक की सजा देकर कमिश्नर ने महाराज सूरतसिंह को दोष-मुक्त कर दिया। कोर्ट में उपस्थित रहे तब तक के लिए उन्हें बैठने को कुर्सी दी गई।

शासन का त्याग
पुत्र को उत्तराधिकार

उस समय खरवा ठिकाने पर कोर्ट ऑफ वार्ड्स का प्रबन्ध था। सरकार द्वारा नियुक्त मैनेजर ही वहाँ का प्रबन्धक होता था। उक्त सारे प्रबन्ध का व्यय भार खरवा ठिकाने पर पड़ता था। राव गोपालसिंह और उनके पुत्र कुँ. गणपत सिंह दोनों ही कोर्ट का प्रबन्ध हटाकर ठिकाने को इस अतिरिक्त व्यय-भार से बचाने के पक्ष में थे। परन्तु राव गोपालसिंह को पुन: ठिकाने का शासनाधिकार सौंपने के लिए सरकार तैयार नहीं थी। उनकी मृत्यु से पूर्व उनके पुत्र को वैज्ञानिक रूप से खरवे का राव बनाया नहीं जा सकता था। इस वैधानिक जटिलता को राव गोपालसिंह ने अपने पुत्र कुँ. गणपतसिंह के हक में अपने राज्य-पद का त्याग करके समाप्त किया। सन् 1930 ई. के प्रारम्भ में राजपूताना

के ए.जी.जी. रेनाल्ड (L.W. Renold) को उन्होंने पत्र लिखकर सूचित किया–''अब हम इस्तमरारदार बने रहना नहीं चाहते। इस्तमरारदार के हमारे सारे अधिकार अपने पुत्र कुँ. गणपतसिंह को सौंपना चाहते हैं। ठिकाने पर से कोर्ट ऑफ वार्ड्स हटाकर पुत्र को हमारे स्थान पर खरवा की गादी दे दी जावे। वह इस्तमरारदार हमारे माना जावे। (दिनांक 1 जनवरी 1930 ई. तद्नानुसार पोष सुदी 2 सं. 1987)

उपरोक्त आशय का ही एक दूसरा पत्र अजमेर कमिश्नर गिब्सन (E.C. Gibson) को लिखा, किन्तु अजमेर की अंग्रेज सरकार एक वर्ष तक अन्तिम निर्णय नहीं ले सकी। अन्त में सन् 1931 की 28 मार्च को राव साहब से राज्य त्याग का दस्तावेज (Abdication Letter) लिखाकर उनके एक मात्र पुत्र कुंवर गणपतसिंह को खरवा का शासन प्रदान किया और उसे खरवा का वैधानिक इस्तमरारदार घोषित किया। इस प्रकार खरवा के वैधानिक शासक बन जाने पर भी राव गोपालसिंह के पुत्र गणपतसिंह जीवन पर्यन्त 'कुंवर' उपाधि से ही सम्बोधित किए जाते रहे। अपने पिता की मृत्यु सन् 1939 ई. पश्चात ही वे रात पदवी का उपयोग करने लगे थे।

साभार–**'राव गोपालसिंह खरवा'**

लेखक– **सुरजनसिंह झाझड़**

पृष्ठ 15 का शेष

हिन्दू संस्कृति : मर्यादा के दृष्टिकोण से

के पास मिल जाते हैं। लोहे का सामान भी घर में होता ही है। तो क्या हम सोने के गहनों को चौक में पड़ा रहने देते हैं। नहीं उन्हें यथासम्भव सुरक्षित स्थान पर ही रखते हैं–लोहे के सामान की उतनी सुरक्षा नहीं करते जितनी गहनों की करते हैं। ऐसा क्यों है, क्या हम सोच नहीं सकते। मानव मन चोर की वृति न होते हुये भी चौक में सोने को देखकर लालायित होने की सम्भावना को नकारा नहीं जा सकता। ऐसी अवस्था में चोरी करने वाले की नियत को दोष देकर इतिश्री कर लें तो नुकसान किसका होगा। केवल चोर की गन्दी मनोवृत्ति को कोसने से इस समस्या का समाधान नहीं हो सकता। इसके लिये स्वयं भी सतर्क रहना होगा कि ऐसा क्यों करें कि चोर का मन लालायित हो। यही वजह है कि हम गहने को छिपाकर कहीं सुरक्षित स्थान पर रखते हैं जिस पर चोर की निगाह ही न पड़े।

उपरोक्त उदाहरणों से हमें सीखना चाहिए कि अंग प्रदर्शन दूसरे को गलत काम करने का न्योता देता ही है। ऐसे में गलत काम करने वाला तो दोषी है ही है, साथ में उसे प्रोत्साहित होने को मजबूर करने वाला भी उतना ही दोषी माना जाना चाहिए। आत्महत्या करने वाला दोषी है कानून में किन्तु आत्महत्या को प्रोत्साहित करने वाला तो सरासर दोषी है, कानून के अनुसार भी और नैतिकता के आधार पर भी।

जन्मदिवस को दान–पुण्य या होम आदि शुभ कर्म करके मनाने की बजाए हम केक काटते हैं और मोमबत्ती बुझाते हैं जो अशुभ का प्रतीक है और ''हैप्पी बर्थ–डे टू यू'' गाना गाते हैं बड़े उत्साह से। क्या हम जन्मदिन की बधाई अथवा अन्य शुभ आशीष नहीं दे सकते? दे सकते हैं लेकिन हम पुरातनपंथी कहलाये जायेंगे। आश्चर्य है कि हम सम्पन्न, मर्यादित व सनातन संस्कृति त्याग कर गर्व महसूस करने लगे हैं।

●

आधुनिक जीवन का आधार कोई जीवन दृष्टि या दर्शन है भी कहाँ? सिर्फ मतवाद है और तंत्र है?

– सच्चिदानन्द हीरानन्द 'अज्ञेय'

क्षत्रियत्व और श्री क्षत्रिय युवक संघ

– स्व. हनुमानसिंह गांगियासर

आज के युग में समाज एवं संस्कृति के महत्त्व का इतना ह्रास हो गया है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को उभारने की ही कल्पना करता है। यह भारतीय संस्कृति एवं समाज की पूर्णतया उपेक्षा कर रहा है। इस वैज्ञानिक युग के प्रबल प्रवाह में अपनी सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यविधियों को भूलकर केवल कल्पना की उड़ान में उड़ रहा है।

इस आपाधापी के वातावरण में क्षत्रिय युवक भी इतने भ्रमित हो गए हैं कि वे अपने मान बिन्दुओं, कर्तव्य एवं अधिकार को भूल चुके हैं। वे युवा हो गए, उच्च शिक्षा भी ग्रहण कर ली, पर उनको अपने सामाजिक दायित्व के प्रति आकर्षण पैदा करने के लिए कुछ ईश्वरप्रद स्वाभाविक गुणों की जानकारी आवश्यक है।

मनुष्य में जन्मजात स्वाभाविक गुण कभी नष्ट नहीं हो सकते, पर सांसारिक वातावरण के उतार-चढ़ाव में प्रगट नहीं हो पाते। उसी प्रकार क्षत्रिय युवक भी समय व वातावरण के थपेड़ों में अपने क्षत्रियोचित स्वाभाविक गुणों को भूल चुके हैं। लेकिन जब भी राष्ट्र एवं संस्कृति पर विपत्ति आती है, उनका क्षत्रिय कर्तव्य, जो कि समाज व राष्ट्र में विष तत्त्वों का नाश करना, एवं अमृत तत्त्वों की रक्षा करना है, प्रकट हो ही जाता है। इतिहास में हम पढ़ते हैं, कि महाराणा प्रताप के भाई शक्ति सिंह एक शिकार की बात पर प्रताप से नाराज होकर शत्रु की तरफ हो गए, पर ज्योंहि चेतक के घायल होने पर उनको मुगल सैनिकों से घिरते देखा, उनका जन्मजात भ्रातृत्व जाग उठा एवं तुरन्त मुगल सैनिकों को मारकर प्रताप के चरणों में गिर पड़े। पूज्य श्री तनसिंह जी ने उसी छिपी हुई रक्त की तासीर को पुनः सही राह पर लाने के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना एवं अपने साहित्य में स्वधर्म पालन को समझाने का सर्वोत्तम मार्गदर्शन प्रगट किया है।

मैं मेरे सभी क्षत्रिय बन्धुओं से निवेदन करता हूँ कि, आज भी हम में उन क्षत्रिय वीर पूर्वजों का रक्त संचारित हो रहा है। उस रक्त के स्वभाविक गुण भले ही काल के थपेड़ों के कारण थोड़े सुप्त हो गए हैं, पर जिस प्रकार एक राख के ढेर में दबी चिनगारी की प्रज्वलन शक्ति कभी शान्त नहीं होती, एवं हवा के झोंके से राख में से निकलने पर भयानक दावानल का रूप ले सकती है, इसी प्रकार कोई झौंका हमारे सुप्त जन्मजात संस्कारों पर पड़ी राख को हटा दे, तो हम भी पूर्वजों की भाँति ही इस संसार में हमारा क्षत्रियोचित चरित्र दिखा सकते हैं।

पर प्रश्न यह है, कि हमारे उन स्वाभाविक गुण धर्मों को प्रगट कर निखारने का मार्ग कौन बतये? हम हमारे पूर्वजों का गुणगान करके, अथवा गीता, रामायण आदि सद्ग्रंथ पढ़कर ही उन गुणों को जीवन में धारण नहीं कर सकते, इसके लिए हमें क्रियात्मक अभ्यास की आवश्यकता है। ऐसा ही अभ्यास कराने का कार्य केवल एक ही संस्था करती है, और वह है, श्री क्षत्रिय युवक संघ, जो प्रात: 4 बजे जागरण से लेकर रात 10 बजे तक अपने हर कार्यक्रम में क्षत्रियोचित गुणों को स्वभाव में ढ़ालने का अभ्यास कराता है।

हमारे देश में क्षत्रिय समाज की अन्य भी सैकड़ों संस्थाएँ हैं, जो कई प्रकार का साहित्य भी प्रसारित करती हैं, पर उनके क्षात्रत्व प्राप्ति का क्रियात्मक अभ्यास नहीं करवाया जाता। कोई तो अपने व्यक्तिगत हितों को साधने में समाज का उपयोग करते हैं, तो कोई राजनैतिक हित के लिए।

हालांकि आज के प्रजातंत्र के युग में राजनैतिक क्षेत्र की भी समाज में महत्ती आवश्यकता है, पर संघ पहले ऐसा चरित्रवान समाज तैयार करना चाहता है, जिसके लोग खुद कर्तव्य मार्ग पर चलने वाले हों एवं तब ऐसे ही चरित्रवान राजनेताओं का चयन कर सके। राजनीति में संघ, किसी एक पार्टी के पक्ष में नहीं है, वह समाज के हित का पक्षधर है। श्री क्षत्रिय युवक संघ, राजनीति में इच्छुक किसी भी स्वयंसेवक पर किसी पार्टी विशेष से जुड़ने या अन्य भी किसी भी प्रकार की पाबंदी नहीं लगाता। श्री क्षत्रिय युवक संघ के कई स्वयंसेवक पहले भी राजनीति में अपनी व्यक्तिगत रुचि अनुसार अलग-अलग पार्टियों में रह चुके हैं।

गतांक से आगे

आदर्श और अनूठे गाँव

– कर्नल हिम्मतसिंह

बींवा–हरियाणा
मॉडल गाँव–सामाजिक सौहार्द

बींवा एक छोटा-सा गाँव है जो हरियाणा राज्य की नूह तहसील, जिला मेवात के अन्तर्गत आता है। अरावली पर्वत श्रृंखलाओं की वादी में बसे इस गाँव की आबादी 1500 के लगभग है। गाँव के समाज सेवी श्री संधू के नेतृत्व और जनभागीदारी ने इस गाँव को मॉडल गाँव बना दिया है।

बींवा गाँव के हर घर में शौचालय है। गाँव की सभी गलियाँ पक्की हैं। लड़कियों के लिए गाँव में सिलाई केन्द्र है। गाँव में सामाजिक सौहार्द का पैगाम देती एक खूबसूरत मस्जिद है जिसका निर्माण समाजसेवी श्री एस.एस. संधु ने स्वयं 70 लाख रुपये की लागत से करवाया है।

गाँव में सभी सुविधाओं से लैस प्राथमिक पाठशाला है जिसमें 15 कक्ष हैं। बिजली की जरूरत को पूरी करने के लिए स्कूल की छत पर सोलर पैनल लगवा रखे हैं। मिड-डे मील पकाने के लिए गैस के चूल्हे उपलब्ध हैं। स्कूल में लड़के और लड़कियों के लिए तो अलग शौचालय है ही साथ ही विकलांगों के लिए भी अलग शौचालय है। स्कूल के बच्चों को कम्प्यूटर का भी प्रशिक्षण दिया जाता है। गाँव के लोगों ने स्कूल में सभी प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए करीब 30 लाख रू. खर्च किये हैं।

गाँव में साफ सफाई का विशेष ध्यान रखा जाता है। हर घर के सामने सोकपिट बना रखा है जिसमें घरों का गन्दा पानी रास्ते में न बहकर जमीन के अन्दर जाकर इकट्ठा हो जाता है। पीने के लिए प्रचुर मात्रा में स्वच्छ जल उपलब्ध है।

बीबीपुर : जिला हिसार हरियाणा
विकास और नारी सशक्तिकरण का आदर्श

बीबीपुर हरियाणा राज्य के हिसार जिले के अन्तर्गत आता है। इस गाँव ने विकास और नारी सशक्तिकरण की अनूठी मिसाल प्रस्तुत की है। लिंग भेद को मूल से नष्ट कर समाज में नारी के सम्मान को बढ़ाने के लिए गाँव के घरों और गलियों का नामकरण लड़कियों के नाम पर किया गया है। इस सराहनीय सोच के जनक हैं, इसी गाँव के एक युवा श्री सुनील जगलान जो सन् 2010 से 2015 तक इस गाँव के सरपंच रहे हैं।

सर्वप्रथम सन् 2012 में जगलान ने अथक परिश्रम कर अपने क्षेत्र के 100 खापों के नेताओं को एक जगह एकत्र कर उन्हें कन्याभ्रूण हत्या के विरुद्ध संकल्प लेने के लिए राजी कर लिया। फिर उन्होंने औरतों को ग्राम सभा में सक्रियता दिखाने के लिए प्रेरित किया।

जगलान के नेतृत्व में ग्राम पंचायत ने प्रस्ताव पारित किया कि सरकार की तरफ से विकास कार्यों के लिए मिलने वाले आर्थिक अनुदान की आधी रकम के उपयोग के फैसले ग्रामीण नारी सभा लेगी। महिलाओं के प्रति पूर्वाग्रह रखने वाले और पितृसत्ता को मानने वाले राज्य के लिए यह एक अनोखी पहल थी, जिसका सभी ने स्वागत किया। जगलान के सरपंच रहते सन् 2012 से 2015 के बीच पंचायत ने 1.25 करोड रुपये का इनाम हासिल किया। पंचायत को सन् 2012 में एक करोड़ रुपये राज्य सरकार से मिले और 10 लाख रुपये बेटी बचाओ अभियान की सफलता पर 2013 में केन्द्र की ओर से मिले। बाद में 2014 में बीबीपुर को ग्राम सभा सशक्तिकरण के लिए राजीव गांधी पंचायत सशक्तिकरण अभियान के लिए चुना गया और केन्द्र से

पंचायती राज मंत्रालय की ओर से 15 लाख रुपये प्रदान किये गये।

श्री जगलान ने विशिष्ठ सोच और नारी सशक्तिकरण की दिशा में हासिल की गई अपनी उपलब्धियों की एक प्रस्तुति दी जिसकी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने खूब प्रशंसा की। उसके बाद राष्ट्रपति ने हरियाणा प्रान्त के सौ गाँवों को नारी सशक्तिकरण की दिशा में विकसित करने लिए गोद लिया है।

राष्ट्रपति सचिवालय ने मई 2016 में जगलान को एक पत्र के द्वारा सूचित किया है कि वे गाँवों में सामजिक मुद्दों और नारी सशक्तिकरण के लिए जागृति अभियान का संचालन करे।

जुलाई 2016 में राष्ट्रपति भवन ने पहले, पाँच गाँवों को स्मार्ट विलेजेज में परिवर्तित करने का निर्णय लिया और फिर फरवरी 2017 में इन गाँवों की संख्या 50 कर दी, यह सिलिसिला यहीं नहीं रुका, 1 मई, 2017 तक स्मार्ट विलेजेज के तौर पर विकसित करने वाले गाँवों की संख्या बढ़ाकर सौ तक पहुंचा दी। स्मार्ट विलेज पहल के अन्तर्गत अनेक प्राइवेट और सरकारी संस्थाएँ, शिक्षा, स्वास्थ्य और एनर्जी के क्षेत्र में इन गाँवों में राष्ट्रपति भवन के दिशा निर्देशों पर कार्य कर रही हैं।

जगलान ऐसे दायित्वों को निभाने में गर्व महसूस करते हैं और देश में नारी सशक्तिकरण के लिए जागृति अभियान का संचालन करने के लिए तैयार है।

बाबेन–गुजरात

स्वच्छ एवं सुन्दर आदर्श ग्राम

बाबेन गुजरात राज्य का सुपर आदर्श गाँव, सूरत से 35 किमी की दूरी पर स्थित है। यह गाँव सुविधाओं के मामले में न सिर्फ देश के विकसित नगरों को बड़ी टक्कर देता है बल्कि विदेशों की योजनाओं और सुविधाओं को भी चुनौती देने की क्षमता रखता है। यह देश का कदाचित अकेला गाँव है जिसकी पंचायत के पास एक करोड़ रुपये की सावधि जमा है। सन् 2011 में गुजरात सरकार द्वारा इस गाँव की ग्राम पंचायत को बेस्ट पंचायत ऑफ दी ईयर का अवार्ड प्रदान कर सम्मानित किया था।

15 हजार की आबादी वाले इस गाँव में 35 जातियों के लोग निवास करते हैं। गाँव में कुल 850 मकान हैं जिनमें 95 प्रतिशत से अधिक पक्के मकान हैं। गाँव के अन्दर 12 फीट चौड़ी सड़क है जिसके दोनों ओर स्ट्रीट लाइट्स लगी है। सड़क का निर्माण सरकारी सहायता से नहीं बल्कि पंचायत के द्वारा कराया गया है। इस गाँव में सभी प्राथमिक सुविधाएँ जैसे आंगनबाडी, पंचायत घर, कम्यूनिटी हॉल प्राथमिक और उच्च विद्यालय, एम्बूलेंस, तरणताल, बैंक और डाकघर के लिए अलग भवन है। अत्याधुनिक व्यायामशाला, खेलों के प्रांगण, डिस्को क्लब और रंगमंच भी उपलब्ध है। गाँव में गटर लाइन और सार्वजनिक शौचालय है तथा बिजलीके तार अण्डर ग्राउण्ड डाले गए हैं।

2007 में सरपंच भावेश भाई के नेतृत्व में पंचायत के सभी 19 सदस्यों ने गाँव को आदर्श बनाने का संकल्प लिया, तभी से गाँव की तस्वीर बदलने लगी। पंचायत ने गाँव के विकास का खाका तैयार कर ग्रामवासियों की स्वीकृति प्राप्त की और फिर धन जुटाने की प्रक्रिया शुरू की जिसमें सभी ने सहयोग किया। यहाँ के लोगों ने सामुदायिकता की भावना से काम कर अपने गाँव को देश के लिए रोल मॉडल बना दिया है।

इस गाँव में एक शुगर मिल है, जो यहाँ के लोगों को रोजगार मुहैया करवाती है। शिक्षा के लिए यहाँ का इंजीनियरिंग कॉलेज, डिग्री और डिप्लोमा कोर्स चलाता है।

इस गाँव के मध्य में एक पक्का सरोवर है जो गाँव की सुन्दरता को चार चांद लगाता है। सरोवर के चारों ओर का नजारा इतना खूबसूरत है कि इसे देखने दूर-

दराज के लोग यहाँ आते हैं। गाँव में पीने के पानी की सप्लाई नल द्वारा होती है और कभी भी पानी की किल्लत नहीं रहती है। पानी की टंकी का निर्माण भी पंचायत ने ही करवाया है।

गाँव की सड़कों की सफाई करने के लिए 22 सफाई कर्मचारियों की पूरी टीम है जो हर सुबह अपने काम में लग जाती है। घरों से कचरा एकत्रित करने के लिए पंचायत की गाड़ी भी आती है।

पंचायत क्षेत्र में भूमि और भवन बिक्री का व्यवसाय बहुत प्रचलित है। पंचायत प्रत्येक भूखण्ड की बिक्री पर 2000 रुपये लेती है और इतनी ही रकम भवन निर्माता (मालिक) से भी लेती है। इस कर से पंचायत की अच्छी आमदनी होती है।

बरदोली से बाबेन के बीच की सड़क 2 कि.मी. की दूरी तय करती है और 12 मीटर चौड़ी है। इसका सफर किसी हाईवे से कम सुखद नहीं है। भारत की स्मार्ट सिटी की तरह नजर आता है यह हाईटेक गाँव जिसको देखने दूर अराज से लोग आते है।

दो बुर्जी (लुधियाना पंजाब)
मॉडल गाँव–सामाजिक और भौतिक विकास

दो बुर्जी एक छोटा–सा गाँव है जो पंजाब प्रान्त के जिला लुधियाना की दोराह तहसील में स्थित है। इस गाँव की जनसंख्या लगभग 1500 है। इस गाँव को राष्ट्रीय स्तर पर पंचायत सशक्तिकरण पुरस्कार से सम्मानित होने का गौरव प्राप्त है। यह पुरूस्कार प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गाँव की पंचायत को 24 अप्रेल 2017 को लखनऊ में आयोजित एक समारोह में प्रदान किया था ।

इस गाँव के अन्दर पक्की सड़क, सोलर लाइट्स, स्वच्छ तालाब और सिंचाई की पर्याप्त सुविधाएँ उपलब्ध है। गाँव की सरपंच श्रीमती सुखवीर कौर एक पढ़ी लिखी (–MA English) और जागरूक महिला है। इस महिला सरपंच ने गाँव के समाजिक और भौतिक विकास को नई ऊँचाई पर पहुँचाने का एक कीर्तिमान स्थापित किया है।

उपनिवासी भारतीयों (NRIs) की मदद से गाँव में जल शुद्धीकरण यंत्र लगवाया है ताकि सभी को पीने के लिए शुद्ध पानी मिले और साथ ही एक एम्बूलेंस भी खरीदी गई है। गाँव के अन्दर अप्रत्यक्ष रोग जैसे डेंगु, मलेरिया और चिकनगुन्या आदि से बचने के लिए समय–समय पर फॉगिंग की जाती है। गाँव में मेडिकल केम्प भी आयोजित किये जाते हैं। लोगों को 'नशा मुक्ति' और 'बेटी बचाओ' जैसे समाज सुधारों के लिए भी शिक्षित और प्रोत्साहित किया जाता है। लड़कियों को उनकी उपलब्धियों के लिए सम्मानित किया जाता है और प्रोत्साहित किया जाता है। इन सभी उपायों का नतीजा है कि, गाँव में लड़कों के मुकाबले लड़कियों की संख्या बढ़ी है।

गाँव में विकास कार्यों के लिए सरकारी योजनाओं का पूरा फायदा उठाया जाता है। गाँव के विकास के लिए NRIs और ग्रामीण भी खुले दिल से चन्दा देते हैं। गाँव निवासी महसूस करते हैं कि वर्तमान सरपंच श्रीमती सुखबीर कौर ने गाँव की काया पलट कर दी है। वे सभी विकास कार्यों में सहायता करते हैं। सरकारी कर्मचारी भी पूर्ण सहयोग करते हैं और चाहते हैं कि यह गाँव अन्य गाँवों के लिए रोल मॉडल बने ताकि उन गाँवों का विकास भी गति पकड़ सके।

एराविपेरूर–केरल
सर्वश्रेष्ठ लोक प्रशासन के लिए
प्रधानमंत्री द्वारा पुरुस्कृत

एराविपेरूर केरल राज्य के प्रथममिठत्ता जिले का एक गाँव है। यह एक विशाल गाँव है जिसका अतीत और वर्तमान गौरवशाली रहा है। गाँव के लोग शान्तिप्रिय हैं, जिनका मुख्य व्यवसाय खेती है। यहाँ के

निवासी प्रगतिशील और विकास एवं बदलाव के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। यहाँ की पंचायत सर्वश्रेष्ठ लोक प्रशासन के लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा सम्मानित की जा चुकी है। यह सम्मान दूसरे गाँवों के लिए अनुकरणीय अभिनय उपाय प्रस्तुत करता है।

यह गाँव चार स्टेट अवार्ड और एक प्रतिष्ठित राष्ट्रीय सम्मान से नवाजा जा चुका है।

स्टेट अवार्ड्स

1. जैव विविधता के संरक्षण के लिए। 2. स्वच्छता पुरुस्कार। 3. दर्द और प्रशासक देखभाल के लिए? 4. हाई टेक ग्रीन विलेज ।

इनसे भी बढ़कर एराविपेरूर पहली ग्राम पंचायत है जिसने सर्वश्रेष्ठ लोक प्रशासन के लिए राष्ट्रीय सम्मान पाने का गौरव प्राप्त किया है।

पंचायत के सरपंच श्री एन राजीव ने सर्वश्रेष्ठ लोक प्रशासन का अवार्ड भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से 4 अप्रेल, 2015 में प्राप्त किया। इस अवार्ड के तहत पाँच लाख रुपये, प्रशंसापत्र और स्मृति चिन्ह प्रदान किये गये।

पंचायत ने ई-गवर्नेन्स को महत्त्व दिया है। ई-गवर्नेन्स के जरिये लोग घर बैठे निम्न कार्य कर सकते हैं :-

1. वायुयान या रेलगाड़ी में सीट की बुकिंग। 2. पानी बिजली के बिल भरना। 3. बैंकों में रकम जमा करना अथवा निकालना। 4. जन्म एवं मृत्यु प्रमाण पत्र लेना। 5. लोक विभाग की शिकायत करना या शिकायत की स्थिति की जानकारी प्राप्त करना। 6. विद्यालयों में दाखिला लेना या परीक्षाफल प्राप्त करना।

ई-गवर्नेस एक ऐसा सिस्टम है जिससे सरकारी काम-काज में पारदर्शिता के साथ-साथ सभी सेवायें जनसामान्य तक तत्काल पहुँचायी जा रही है। पंचायत सभी सर्टिफाइड सूचनाएँ SMS के जरिये भेजती हैं और कर्मचारियों की पगार का भुगतान बैंक के मारफत करती है। सभी ऑफिस रिकार्डस को डीजिटलाइज्ड कर दिया है और पंचायत ने एक मिनिट में सर्टीफिकेट स्कीम को 2014 में शुरू कर दिया था।

पंचायत ने स्वच्छता मिशन के साथ मिलकर कचरा प्रबंधन की जो योजना बनाई उसका सभी ने स्वागत किया है।

2013 में पंचायत ने वारात्तर नदी के पुनर्जीवन का भी काम अपने हाथ में लिया है।

ई-लिटरेसी के लिए केलट्रोन, टेक्नोलॉजी मुहैया करवा रहा है। पंचायत ने टोटल ई-लिटरेसी की भी योजना अपने हाथ में ले रखी है। इसके अलावा पंचायत सिविल सर्विसेज के लिए इच्छुक उम्मीदवारों के लिए कोचिंग सेण्टर और योगा सेण्टर का भी संचालन करती है। **(क्रमशः)**

विराटता

शिक्षा कहती है : 'मैं सत्ता की दासी नहीं, कानून की किंकरी नहीं, विज्ञान की सखी नहीं, कला की प्रतिहारी नहीं, अर्थशास्त्र की बांदी नहीं। मैं तो धर्म का पुनरागमन हूँ। मानव के ह्रदय, बुद्धि एवं इन्द्रियों की स्वामिनी हूँ। मनोविज्ञान और समाजशास्त्र मेरे दो पैर हैं। कला और हुनर मेरे दो हाथ हैं। विज्ञान मेरा मस्तिष्क है। धर्म मेरा दिल है। निरीक्षण और तर्क मेरी दो आँखें हैं। इतिहास मेरे कान हैं और स्वतंत्रता मेरी साँस है। उत्साह और उद्योग मेरे फेफड़े, हैं। धैर्य मेरा व्रत है। विश्वास चेतना है। ऐसी जगदम्बा हूँ मैं- जगद्धात्री। मेरी उपासना करने वाला किसी दूसरे का मुखापेशी नहीं रहता। उसकी सारी आशा-आकांक्षाएँ मेरे द्वारा तृप्त हो सकती है।'

- काका कालेलकर

आँख आना

– डॉ. ईश्वर सिंह ढीमा

आजकल चारों तरफ आँख आने की खबरें छप रही हैं। बच्चों की आँखें लाल हो रही हैं। लड़कियाँ और लड़के कॉलेज में परेशान हैं कि जरा सी नजर मिली नहीं की आँख लाल हुई नहीं, बेचारे नजरों को नीची करके चलते हैं जैसे तुलसीदास की रामायण में लक्ष्मण जी पलकें झुका कर चलते थे।

आँख भी निगोड़ी है कवि गंग ने कहा था–''चंचल नारी के नैन छुपे नहीं'', आँख मन का दर्पण है । मन कहाँ बन्धन में रहता है। वह तो सात घोड़ों की सवारी पर रहता है। कैसे लगाम कसकर रखे कभी इधर तो कभी उधर, हमारी संस्था में आँख ने स्कूल खाली करवा दी । कुछ बच्चों की आँखें आई तो कुछ को आँख के बहाने माँ याद आ गई। स्मृति इतनी घनी थी कि कुदरती लाल नहीं हुई तो मसल-मसल कर आँख लाल करके छुट्टियाँ तो ले ही ली, बच्चे जो ठहरे, आँख बेचारी निर्दोष कब तक अत्याचार झेलती, आखिर उसने भी गिरगिट की तरह रंग बदल लिया। वैसे तो आँख को निर्दोष कहना बेमानी होगा। हमारे पूर्वज भी मानते हैं कि आँख बड़ी बदमाश है–''ज्यों नैना सैना करें उरज उमेठे जाहि'' आँख कुटिल है हरकत वो करती है और सजा उरज को होती है। बाकी उरज तो वात्सल्य का अमीरस धारण कर अमृत धारक सिन्धु की तरह कंचुकी की शोभा है । कभी पहल नहीं करते। यह आँख ही है जो कंट्रोल में नहीं रहती। मनुष्य की आँख में अपार देखने की क्षमता है। वह सो परतें चीरकर भूगर्भ के तत्व को देख लेती है। तो नभ मण्डल को चीरकर नक्षत्रों को भी। आदमी के मन को पढ़ लेती है और दर्द बनकर बह भी जाती है। ये आँख ही है जिसने इतिहास में पद्मिनी को जौहर के लिए प्रेरित किया और महाभारत के योद्धाओं की मौत का कारण भी बनी। अन्धे का पुत्र अन्धा। आँख आ जाए तो अन्धा भी सूरदास बनकर वात्सल्य का वैभव वर्णित कर सकता है। और न आए तो कुरुक्षेत्र में अपने ही कुल का सत्यानाश भी करवा सकता है। शासन की आँख लग जाए तो कुम्भकरणी नींद लाखों को पानी में डुबो दें। आँख लाल हो जाए तो सागर पर भी माफी के लिए दबाव डाल सकती है। आँख की लीला न्यारी है।

वर्तमान में आँख का बोलबाला है। लोगों के पास किस्म-किस्म की आँखें होती हैं। नेता के पास चमचों को पहचानने की आँख होती है। पुलिस वालों के पास चोर को पकड़ने की, शिक्षकों की आँख का बड़ा महत्त्व है, अगर आँख का अन्धा शिक्षक हो तो सारा समाज बुद्धुओं से भरा होगा। द्रोण जैसा एक आँख वाला शिक्षक भी नहीं होना चाहिए और परशुराम की तरह क्रोधी आँख वाला शिक्षक भी नहीं होना चाहिए। शिक्षक तो चाणक्य जैसी आँख वाला होना चाहिए। शिक्षक की आँख ही राष्ट्र में भविष्य के दृश्य को जन्म देती है।

आजकल नेताओं की आँख महत्त्वपूर्ण हो गई है। आँख के अन्धे भी नयनसुख होकर सबको अच्छे दिन का दृश्य दिखाने लगे हैं। उनकी आँख भी गजब की निराली होती है। दूर का तो देखती है परन्तु पाँवों के तले नहीं देखती। विपक्षी पार्टियों के नेताओं की तिजोरियों में पड़े माल को देख लेती है। विरोधी नेता के बेडरूम के दृश्य भी पकड़ लेती है। इतना ही नहीं विपक्ष की आँख किस मुद्दे पर टिकी है उस पर भी उसकी नजर होती है परन्तु वही आँख ठीक पाँव के नीचे नहीं देख पाती। यह गजब है!

कुछ आँखों को रंगों की बीमारी होती है। कुछ को चारों तरफ हरा ही हरा दिखाई देता है। हरा परन्तु केशरी, लाल, नीला, पीला दिखाई नहीं देता । इतना ही नहीं।

आँख का खेल बड़ा निराला है। अंधे सदैव रोते हैं कि वे अंधे हैं आँख वाला कर दो। दो आँख वाले भी तो करोड़ों अंधे घूम रहे हैं उसका आप क्या कीजिएगा?

सरकारी अधिकारियों की आँखें तो गजब होती हैं, ठेकेदार का पुल सड़क और बिल्डिंग नहीं देख पाती परन्तु किसान ने अगर कहीं गाएँ चरा दी तो तुरन्त गाय चराने वाला दिख जाता है। इनकम टैक्स अधिकारी तो अन्तर्यामी है। उनकी आँख सबसे सतर्क होती है। रसखान भी कह उठते हैं-आँखें हो तो वही रसखानी दियो जो इन्कमटैक्स अधिकारी। वे सीए की आँखों में आँखें डालकर जान लेती है कि किस चाबी से सीए ने टैक्स न देने का ताला खोला है।

वकीलों के पास अपराधी की आर्थिक हालात पहचानने की गज़ब शक्ति होती है। वे उसी के आधार पर मुकदमा कितना लम्बा खींचना है, तय करते हैं। लोग उस आँख को सत्यशोधक आँख भी कहते हैं हालाँकि वे उससे ठीक उल्टा काम लेते हैं। अभी-अभी अहमदाबाद में हुए एक एक्सीडेंट के बाद में जिसमें तथ्य पटेल नाम के लड़के ने नौ आदमियों को सिर्फ इस लिए मार दिया कि वह अपनी जेगुआर महँगी कार की ब्रेक लगाना भूल गया था। बड़े लोग अक्सर भूल जाते हैं, सलमान खान एक बार भूल गए कि फुटपाथ पर लोग रात को सोए भी होते हैं। गाड़ी रोड पर चलनी चाहिए परन्तु बड़े लोगों की आँखों को छोटी चीज दिखाई नहीं देती। तथ्य के वकील ने कहा कि रोड़ पर लाईट नहीं थी, स्पीड ब्रेकर नहीं था इसलिए आदमी मारे गए। गाड़ी की लाईट और ब्रेक देखना शायद वकील साहब भूल गए। अजीब बात है धनवानों की आँखें अपने भीतर नहीं देखती। हम तो भीतर देखने वाली परम्परा के लोग हैं इसीलिए तो कह पाए 'बुरा जो देखन मैं चला बुरा न मिलिया कोय।'' समय रहते आँखों का इलाज नहीं करवाया गया तो सारे समाज की आँखों से पानी उतर जाएगा। समझो। फिर यह रोना मत रोना कि ''पानी गए न ऊबरे मोती मानुष चून''।

फिलहाल तो मेरे घर में भी आँख आ गई है। वैसे तो हर माता पिता यही चाहते हैं कि जितना जल्दी हो सके मेरी सन्तान आँख वाली हो जाए। परन्तु ये तो अन्धा बनने और बनाने के लिए आँख आई हैं। लड़का परीक्षा ना देने का बहाना खोज रहा था और उसने आँख से दोस्ती कर ली। अब मैं लाख आँखें लाल करूँ, उसकी माँ की आँखों का तारा तो डरने वाला नहीं है।

मैं लिख तो रहा हूँ परन्तु डरता भी हूँ क्योंकि गौरी लंकेश जैसे लोगों पर पता नहीं किस की आँख टिकी थी कि आखिर वह आँखों से ओझल हो गई। सच कहने वाले धीरे-धीरे आँखों से ओझल हो रहे हैं और झूठों को दुनिया ने आँखों पर बिठा रखा है। आँख वाले भी अन्धों का जिस समाज में व्यवहार करने लगे वहाँ आँख दृष्टि का विकास कैसे सम्भव है?

बच्चे गजब करते हैं, मसल मसल कर आँख ला देते हैं और बड़े आँखें बंद कर अन्धे बन जाते हैं। वैसे भी व्यवहारिक जगत तो खुली आँखों से सोता है। ऐसे भी कई लोग जीवन भर अन्धे बने रहने में ही अपना सौभाग्य समझते हैं। उनको आँख आने या न आने से कोई मतलब नहीं है। ऐसे लोगों का आप क्या कीजिएगा?

अदालत उसे ही अपराधी मानती है, जिसके विरुद्ध अपराध सिद्ध हो जाए। जो लोग छिपकर अपराध करते हैं और कानून से बचकर निकलते हैं, उन्हें न्यायालय तो दण्डित नहीं कर सकता, पर हमारा भीतरी न्यायालय छिपकर जुर्म करने वाले को सरे आम जुर्म करने वालों की अपेक्षा अधिक दण्ड देता है।

– पू. तनसिंहजी

साधना में काया (शरीर) का महत्त्व

– डॉ. मनोहर सिंह किनसरिया

साथकों के लिए काया (शरीर), अपने जीवन के उद्देश्य प्राप्ति का साधन है। इस साधन के बारे में जानकारी एवं इस साधन का सदुपयोग बहुत महत्त्व रखता है।

श्री क्षत्रिय युवक संघ शिक्षण प्रणाली में काया को ठीक रखने एवं सुचारू रूप से चलाने के अनेक उपाय बताए एवं कराए जाते हैं। जैसे कि, दैनिक जीवन में नियम एवं संयम पालन, उचित एवं उपयुक्त भोजन, व्यायाम आदि को जीवन में ढ़ालने का प्रशिक्षण। यह भी बार-बार बताया जाता है कि साधना में मन, बुद्धि व शरीर के तालमेल का लक्ष्य प्राप्ति में बड़ा योगदान है। इस संतुलन को बनाए रखने के लिए भी अनेक उपाय सुझाए एवं करवाए जाते हैं।

एक प्रात: मैं एक धार्मिक स्थान पर दादूवाणी के पाठ सुन रहा था। अचानक काया संबंधित व्याख्यान आया, तो अधिक जानकारी लेने का विचार किया, एवं जब दादूवाणी को विस्तार से जाना, तो लगा, कि इसका साधना में अच्छा योगदान है। प्राय: संघ की शाखाओं व शिविरों के बौद्धिक प्रवचनों में आता है, कि जो ब्रह्माण्ड में है, वह पिण्ड में भी है, अर्थात् वह हमारे शरीर में भी है। श्री तनसिंह जी ने लिखा, कि यह शरीर जगन्नाथ (भगवान) का रथ है, अत: इसे बाहर व अन्दर से पवित्र एवं स्वस्थ रखो। श्री क्षत्रिय युवक संघ इस पवित्रता एवं स्वस्थता को बनाए रखने में हमारी मदद करता है। श्री दादू दयाल जी महाराज ने ''जो ब्रह्माण्डे, सो पिण्डे'' को समझाते हुए इस शरीर की महत्ता को विस्तार से इस प्रकार समझाया है–

काया मांहै (शरीर के अन्दर है) सब ब्रह्माण्ड:– 21 स्वर्ग कहे गए हैं– बासुरी, काल, चित्रगुप्त स्वर्ग, योगणी, गन्धर्व, अर्यमा, महा स्वर्ग, तप स्वर्ग, जन स्वर्ग, सती स्वर्ग, देवी स्वर्ग, भूत, यम, किन्नर, ब्रह्म-राक्षस, राक्षस, सुर नर लोक, देवा स्वर्ग, पयालि स्वर्ग, विश्वकर्मा, खंड स्वर्ग। इसी प्रकार शरीर में पीठ के मध्य 21 गाँठें हैं, सो ही स्वर्ग कहे हैं। बन्हि पुराण में 21 स्वर्गों के नाम इस प्रकार हैं :- आनंद, प्रमोद, औरव्य, निर्मल, त्रिचिष्ट्य, नाक, पृष्ठ, निवृति, पौष्टिक, सौभाग्य, अप्सरस, निरंहकार, भौतिक, अनल, पुण्याय, मंगल, स्वेत, मन्मथ, उपसोहन, शान्ति, निर्वेर निरंहकार, अभेद।

काया माँ है नव खण्ड :– जैसे पृथ्वी के नव खण्ड कहे हैं, वैसे ही काया में नव द्वार हैं। अष्टांग योग में 9 चक्र इस प्रकार हैं– आधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, निरंजन, उद्‌यद, विशुद्ध, बतीसा, आज्ञा और ब्रह्मरंध्र। इनके शरीर में स्थान हैं– गुदा, लिंग, नाभी, उदर, ह्रदय, कंठ, तालु, मस्तक एवं दशवां द्वार। जंबु द्वीप (आदि भारत) के भी नव खण्ड बताए गए हैं– इलावृत, एम्यक, हिरण्यमय, कुरू, हरिवर्ष, किम पुरुष, भारत वर्ष, केतुमाल, भद्रारण वर्ष।

काया मांहै लोक सब :– स्वर्ग, मृत्यु एवं पाताल, ये तीन लोक हैं। स्वर्ग लोक का स्थान शरीर में दशवां द्वार, मृत्यु लोक का उदर व पाताल लोक का पगथली है। इन तीनों लोकों के अंतर्गत ही 14 भुवन एवं 21 ब्रह्माण्ड हैं। किंतु सतगुरु की कृपा बिना यह बाह्य ब्रह्माण्ड शरीर में नहीं देखा जा सकता।

काया मांहै चौदह भवन :– भक्ति अंग में लिखा है कि पाँच ज्ञान इन्दियाँ, पाँच कर्म इन्द्रियाँ, चतुष्ट्य अंत:करण। इनके स्थान काया में अष्टांग योगानुसार इस प्रकार हैं –

1. भूर-मनुष्य, पशु। स्थान- नाभि। 2. भूव-भूत, पक्षी। स्थान- उदर। 3. स्व-देवता। स्थान-ह्रदय।

4. महर-ऋषि। स्थान-छाती। 5. जन-भक्त सकामी। स्थान-कंठ। 6. तप-सूर, सती, सन्यासी स्थान-नासिका। 7. सत्य-ज्ञानी सन्यासी। स्थान-कोखी। 8. अतल-महादेव। स्थान-कोखी। 9. वितल-बाणासुर। स्थान-कमर। 10. सुतल-मय नामा। स्थान-जंघा। 11. रसातल-शेज। स्थान-घुटने। 12. तला तल-बलि। स्थान-पिंडली। 13. महा तल-वासुकी नाग। स्थान-टखने। 14. पाताल-कद्रु पुत्र। स्थान-पगथली।

काया मांहै औंकार :- ओंकार शब्द के अंतर्गत संपूर्ण सृष्टि है। वैसे ही अनहद-शब्द से शरीर के सब व्यवहार होते हैं। और यही शरीर का मूल है। इसी के आधीन प्राणगति है।

काया मांहै ससिहर सूर :- ससिहर -मन और सूर -पवन है एवं दोनों नेत्र। बायां नेत्र चंद्र एवं दाहिना सूर्य है। ब्रह्माण्ड में जैसे चंद्र एवं सूर्य प्रकाशित हैं, वैसे ही शरीर में दोनों नेत्र प्रकाशित हैं। और उसी प्रकार तप्त किरणें व तेज दृष्टि सूर्य की, शीतल किरणें व शान्त दृष्टि चंद्र की। जैसे सूर्य की 12 व चंद्र की 16 कला है, इसी प्रकार काया में चंद्र की 16 कलाएँ-शांति, निवृति, क्षमा, उदारता, निर्मलता, निश्चलता, निर्भयता, निसंकता, समता, निरलोभता, निरममता, निर-अहंकारता, सहवीर्यता, ज्ञान, आनन्द और निर्वाण। वैसे ही सूर्य की 12 कलाएँ काया में इस प्रकार हैं-चिंता, तरंग, डिंभ, माया, परिग्रह, प्रपंच, हेत, बुद्धि, काम, क्रोध एवं लोभ।

काया मांहै तीनों देव :- हमारे शरीर में तीनों गुणों के तीनों देवता के स्थान इस प्रकार हैं-राजस-ब्रह्मा। स्थान-नाभि। सत-विष्णु। स्थान-हृदय। तामस-महादेव। स्थान-मस्तिष्क रूपी कैलाश में।

काया मांहै चारों वेद :- अष्टांग योग में इन वेदों के स्थान-ऋगवेद-नाभि, यजुर्वेद-हृदय, सामवेद-कंठ, अथर्वेद-मुख।

काया मांहे चारों वाणी :- चारों वाणियों के अलग-अलग रूप, अवस्था, देवता व स्थान इस प्रकार हैं- परा-ब्रह्म वाणी, स्थान-नाभि, पश्यंती-देववाणी, स्थान-हृदय, मध्यमा-पशु-पक्षियों की वाणी, स्थान-कंठ, बैखरी-मनुष्यों की वाणी, स्थान-मुख।

काया मांहै सागर सात :- भक्ति अंग में सात धातु माने हैं, सोई सात सागर हैं। सात धातु इस प्रकार हैं, माता से-लोहू, मांस, त्वचा, नाड़ी। पिता से-वीर्य, हाड व मेद (मज्जा)। सात दीप इस प्रकार हैं- जम्बू, प्लक्ष, शाल्मलि, कुश, कौच, साक और पुष्कर। सागर-लवण, ईखरस, सुरा, क्षीर, दधि, घृत, स्वाद। काया में द्वीप व सागर योग मार्ग में ये कहे गये हैं-श्रवण (कान), नेत्र, नासिका, मुख, हस्त, उदर व पग (पैर)। सात सागर क्रम से इस प्रकार हैं- सुधा-दशवां द्वार, घृत-श्रवण (कान), ईख-नेत्र, दधि-नासिका, सुधा-मुख, क्षीर-हृदय, क्षार-कमर स्थान।

काया मांहे नदिया नीर :- नदी कहिए, नव द्वार एवं नाड़ियें, अथवा नवधा भक्ति। नीर-राम राम।

काया मांहै सरवर पाणी, काया मांहै बसे बिताणी :- सरवर-आत्मा, सरोवर या हृदय, प्रेम रूप पाणी, बिताणी-बुद्धि, जो शुभ-अशुभ का निर्णय करती है।

काया मांहै गंग तरंग, काया मांहै जमना संग:- गंगा-उठती वाणी, पिंगला श्वर-प्रेम तरंग। जमना-बैठती वाणी, इड़ा-स्वर, राम नाम का संग।

काया मांहै आत्म-परमात्म का मेल

काया मांहै महल आवास, काया मांहै निश्चल बास :- काया रूपी महल में पंच कोश हैं- अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनंदमय। निश्चल-परमेश्वर, जिसका अंतर्मुख ध्यान, सोई निश्चल बास है।

काया मांहै राजद्वार, काया मांहै बोळणहार :- ब्रह्माड का राजा ईश्वर है, एवं काया में उसका स्थान, हृदय एवं दशवां द्वार है। बोलने वाले प्राण का नेता ईश्वर है।

काया मांहे नवनिधि होई :- नौ नाड़ी अष्टांग योग में कही गई है। उनके नाम व उनसे जुड़ी निधियाँ इस प्रकार हैं- इड़ा-पद्य, पिंगला-महापद्य, सुषुम्ना-शंख, गंधारी-मकर, हस्तिजिह्वा-कच्छप, पूषा-मुकुंद, यशस्विनि-कुंद, अलम्बुखा-नील, कुहू-वर्च्च। इन सबके काया में निश्चित स्थान भी है।

काया मांहै अठ सिद्धि होई :- भक्ति अंग में पांच तत्त्वों व तीन गुणों की पूर्ति में जो सिद्धि होय, सोई आष्टसिद्धि है। अष्टांग योग में अष्टसिद्धि ये हैं- अणिमा, महिमा, लछिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईसीत्त्व, बसीत्त्व, गरिमा। सर्व का भाव सायित्त्व। इनके सिवाय दस सिद्धि और कही है- सर्वज्ञता, दूर श्रवण, पर छाया प्रवेश, वाक सिद्धि, कल्प वृक्षत्त्व, सृजन शक्ति, संहार शक्ति ईशता, अमरत्त्व, सर्व्वांग। ये सभी काया में हैं।

काया मांहै रतन अमोळ :- रतन रूपि मन तो ब्रह्म में लीन होकर अमोल हुआ है। चौदह रतन ये हैं- लक्ष्मी, मणि, कल्पवृक्ष, कामधेनु, अमृत, विष, शंख, धन्वतर, चंद्र, सुरा, सप्तमुखी घोड़ा, ऐरावत हाथी, रंभा और धनुष।

काया मांहै करतार है, सो निधि जाणै नाहि।
दादू गुरुमुखी पाईये, सब कुछ काया मांहि।

जगत का रचियता तो काया में ही है। मन रूपी ब्रह्म ही अपनी मन स्फुरणा से सब प्रपंच रचता है। सो काया के भीतर है। जैसे स्वप्न अवस्था में मन अन्य सामग्री की सृष्टि रचकर सुख-दुःख भोगता है, इसी प्रकार जागृत अवस्था में यही मन व्यवहारिक प्रपंच रचता है। रहस्यों का भेद मिलता है। काया में सब कुछ मिल सकता है। जो खोजे सो पावै।

काया में ही अनुभव का सार है, अर्थात् साक्षात परमेश्वर के दर्शन होते हैं। काया में ही ज्ञान उपजता है, और काया में ही परमेश्वर विराजमान है। काया में ही अनेक कलाएँ हैं, और काया में ही कर्त्ता एक है। काया में ही भगवान का रंग लगता है। भक्ति मिलती है। काया में ही अमर ब्रह्म जीव की शान्ति एवं स्थिति का स्थान है। जिसको हृदय गुहा में अंतर्मुखी वृत्ति द्वारा पा सकते हैं। पाँच तत्वों की काया में 25 प्रकार की प्रकृति है। काया में ही प्रेमरस अर्थात् ब्रह्मरस है। किंतु परमेश्वर का दर्शन, भाव, भक्ति, प्रेम, प्रीति, काया के भेद, यह सब गुरु की कृपा से ही मिलता है। काया में तारणहार है। काया के गुण-विकार जीत कर, संसार की लाज-कुल मर्यादा तजकर, जो भगवान का भजन करे वही पार उतरता है। अर्थात् परमेश्वर जिस पर कृपा करे, सो ही तरे। काया में काम, कोध्र, लोभ, मोह, भय से परमेश्वर तारे, तो जीव तरे।

मनुष्य शरीर पाया है, जो परमेश्वर में रत होकर मुक्ति को पाता है। अर्थात् यह शरीर मुक्ति क्षेत्र है। बाहर के दृश्यों से मन निवृत होकर जब अंतर्मुखी वृत्ति होती है, तब काया में आत्म आनंद की अनुभूति होती है। आत्म रंग को देखने पर सभी मायावी रंग फीके लगते हैं। परन्तु वह अंतर्मुखी ध्यान से ही दिखाई देता है। जब द्वन्द्वों से मन रहित हुआ, तो आनंद है। क्योंकि काया में पुंज प्रकाश, अर्थात् ब्रह्म प्रकाश है। काया में, जिसका अन्त नहीं ऐसी अपार ज्योति है।

काया के इस ज्ञान को ब्रह्मऋषि सतगुरुदेव दादू दयाल महाराज ने सीकरी में उपदेश के रूप में दिया था। ●

विलम्ब विवेक शक्ति को निष्क्रिय बना देता है। मनुष्य को प्रत्येक कार्य इतनी सतर्कता, साधना और निष्ठा से करना चाहिए, मानो संपूर्ण सृष्टि का कल्याण उसी के कार्य की सफलता पर निर्भर है।

– प्रताप नारायण

क्रोध पर विजय

– रश्मि रामदेरिया

''तू मोह माया नै छोड़, क्रोध नै तज रे।
तेरी उमर बीती जाय, राम नै भज रे।।''

मनुष्य को अपने जीवन के परम उद्देश्य स्वधर्म पालन द्वारा ईश्वर प्राप्ति में छः बड़े शत्रुओं का सामना करना पड़ता है- काम, क्रोध, मद (अहंकार), मोह, मत्सर और लोभ। इनमें 'क्रोध' हमारे व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन को बर्बाद करने वाला बहुत बड़ा शत्रु है। क्रोध के प्रवेश होने पर हमारे सोचने की शक्ति अर्थात् सद्बुद्धि तुरन्त समाप्त हो जाती है। सभी इन्द्रियों पर नियंत्रण खो जाता है, परिणामस्वरूप व्यक्ति स्वयं परिवार एवं उससे संबंधित सभी को भारी दुःख झेलना पड़ता है। पूज्य तन सिंह जी ने भी हमें सावचेत करते हुए कहा है,

साथी संभल-संभल कर चलना, बीहड़ पंथ हमारा।

क्रोध का एक कारण, हानि या दुःख भी होता है। पर हानि-लाभ, सुख-दुःख तो जीवन की स्वाभाविक जोड़ियाँ हैं। हानि व दुःख से गुजरने पर ही लाभ एवं सुख के आनंद का असली आभास होता है। हानि या दुःख को स्वयं के धैर्य की परीक्षा मानकर धैर्यवान बनकर चलते रहना चाहिए, एवं आशा रखनी चाहिए कि, 'भगवान के घर देर है, पर अंधेर नहीं।' दुःख आने पर हम प्रभु के भी पास आते हैं, क्योंकि उस समय केवल वही हमारा सहारा एवं अपना लगता है, बाकी सभी पराए लगते हैं।

क्रोध का दूसरा कारण, दूसरे की गलती मानना भी होता है। ऐसा होने पर पहले थोड़ा विचार कर लेना चाहिए, कि कहीं मैं तो गलत नहीं हूँ। फिर यह भी सोचना चाहिए, कि गलती तो सभी से होती है, कभी तो मेरे से भी गलती हुई ही है। इस प्रकार अपनी पुरानी गलती को याद कर सामने वाले की गलती को माफ कर देना चाहिए। फिर जैसा हमारे संत कहते हैं कि व्यक्ति में परमेश्वर का वास है, तो किसी पर क्रोध करना, परमेश्वर एक ही क्रोध करना हुआ, जो कैसे उचित हो सकता है। पूज्य तनसिंह जी ने भी सुख-दुःख, प्रेम व भूलों पर कहा है-

''मुद्दतों से लोटा है, मेरे सुख-दुःख का गवाही रे।
प्राण के हिंडोले में, प्यार भी घनेरा है,
भूल की टहनियों पे, याद का बसेरा है।''

यदि हमने क्रोध में कोई गलत बात या कार्य कर दिया, तो ये प्यार भरी पंक्तियाँ कैसे आनंद दे पाएँगी।

क्रोध का एकऔर कारण है, हम जिस कार्य को जैसा करना चाहते हैं, वैसा नहीं हो पाता। तब श्रीमद्भगवद गीता के तीसरे अध्याय में श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन को कहे वचनों को याद करें- ''कर्म की उत्पत्ति ब्रह्म से हुई है, और ब्रह्म अक्षर-परमात्मा से। इसलिए सदा सब पदार्थों में रहने वाला जो ब्रह्म है, वह सब यज्ञों में प्रस्तुत है। हे पार्थ! इस प्रकार चलाए हुए कर्म के चक्र के अनुसार जो नहीं चलता है, वह पापमय है। जो पुरुष आत्मा में ही रत रहता है और जो आत्मानंद अनुभव से तृप्त रहता है, उसे कुछ भी कार्य शेष नहीं। वह कोई कर्म करे या न करे, उसको कोई प्रयोजन अथवा लाभ नहीं है, और किसी प्राणी से अपना लाभ कर लेने की भी उसे कोई आवश्यकता नहीं है। अतः फल की इच्छा त्यागकर कर्तव्य पालन करते रहें।'' जो कार्य जिस समय, स्थान एवं व्यक्ति द्वारा होता है, होकर ही रहेगा। भाग्य से ज्यादा व समय से पहले किसी को कुछ नहीं मिलता, इस बात को गाँठ बाँध लें। हर व्यक्ति को प्रभु ने किसी विशेष

कार्य हेतु धरा पर भेजा है, क्रोध जैसे शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर जो भी कार्य सामने आए, अहं भाव छोड़कर प्रभु का कार्य समझ कर करें।

''नेक कमाई कर ले बंधु, पता नहीं जिंदगी का,
मीठा सबसे बोल रे, माटी में मत रोल रे,
..........नहीं लगता कोई मोल रे।
अब तो मिला है, फिर ना मिलेगा, मानव तन अनमोल रे,''

अत: सफलता-असफलता हमारे हाथ नहीं, प्रभु के अधीन है। केवल कर्तव्य फल हमारे हाथ है। धैर्य का फल मीठा होता है। शान्तिप्रिय वचन व सहनशक्ति क्रोध पर विजय पाने की सीढ़ियाँ हैं। पूज्यश्री ने कहा है-

फूल खिलेंगे धीरज धरिए, भरिए रस भंडार।
जो कांटे ऊभरें टहनि पे, नयनों से चुग लीजिए।
दण्ड मिले का शोक न करिए भरिए रस भंडार।

क्रोध आने पर कुछ समय शान्त मुद्रा में रहकर थोड़ा विचार कर लें, क्योंकि क्रोध में सोचने की शक्ति व वाणी पर नियंत्रण नहीं रहता, फिर तीर के समान निकल गया वचन वापिस नहीं लौटाया जा सकता। हर व्यक्ति को सदैव अपने भीतर झाँकते रहना चाहिए, अर्थात् अंतरावलोकन करते रहना चाहिए, ताकि क्रोध आदि इन शत्रुओं को अंदर से निकाला जा सके, जिससे अंतर्मन में दीन दयालु, कृपालु, अंतर्यामी, शरणागत के प्यारे परमेश्वर का वास हो सके, जो हमें सदैव सही मार्ग की ओर अग्रसर करते रहें एवं सद्बुद्धि देते रहें।

कमा सको तो पुण्य कमाओ, पाप कमाना मत सीखो
लगा सको तो बाग लगाओ, आग लगाना मत सीखो।
बदल सको तो बुरी आदत बदलो, नीति बदलना मत सीखो।
बढ़ा सको तो प्यार बढ़ाओ, वैर बढ़ाना मत सीखो।।
सीखा सको तो प्रीति सिखाओ, कुरीति सिखाना मत सीखो।।

अतः अभ्यास द्वारा अपने अवगुणों को दूर करने पर हम इन अच्छी बातों को हमारे मस्तिष्क एवं हृदय में प्रवेश करवा पाएँगे। क्रोध पर विजय पाने वाला व्यक्ति बड़ी से बड़ी मुसीबतों का सामना धैर्यपूर्वक अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण रखते हुए कर सकता है, एवं सही समय पर सही निर्णय लेने में पूरी तरह से सक्षम होता है। शान्त चित्त में ही प्रभु का वास होता है, उनके आशीर्वाद से मिली सद्बुद्धि से असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाता है। कठिनाइयों से सामना करना सरल हो जाता है। अतः क्रोध पर जीत ही सबसे बड़ी जीत है।

नमो साधना, धन्य है निष्ठा, दृढ़ता तुझे प्रणाम।
पीड़ा को पी ले तो नित लें, उठकर तेरा नाम।।
मेरे साथी तूं सोच जरा, मत उपहास करा।
चढ़ा कसौटी पर चढ़ रहना, उतरे तो उतर खरा।।

क्षात्र धर्म की जय !

●

रहिमन नीर पहान, बड़ै पै सीझे नहीं।
तैसे मूरख जान, बूझै पै सूझै नहीं।।

रहिमदास जी कहते हैं कि जैसे पत्थर पानी में पड़ा रहता है पर अन्दर से भीगता नहीं, डूबा तो रहता है पानी में पर पानी में पड़ा-पड़ा भी अछूता ही रह जाता है। ऐसे ही नासमझ सत्संग में तो बैठ जाते हैं, सुन लेते हैं, शब्द तो सुन लेते हैं लेकिन अनुभव नहीं करते। सुन ले-समझ ले मगर जीये न, वह मूरख ही है, पत्थर ही है।

विचार आधुनिक हों परन्तु संस्कार भारतीय

– गोविन्दसिंह कसनाऊ

एक राज्य का राजा कर्णदास था। राजा कर्णदास प्रजा हितैषी होने के कारण दूर-दूर तक प्रसिद्ध था। राजा कर्णदास के इकलौता राजकुमार संस्कारदास था। संस्कारदास की आयु 25 वर्ष थी। संस्कारदास को आखेट करने का शौक था। एक दिन संस्कारदास अपने प्रिय घोड़े पर सवार होकर जंगल में आखेट करने निकला। जंगल में शिकार की खोज कर रहा था, उसी समय तेज वर्षा तथा आंधी चलने लगी और तूफान का रूप धारण कर लिया।

राजकुमार संस्कारदास का घोड़ा बिदक गया और द्रुत गति से दौड़ने लगा। घोड़ा राजकुमार के काबू से बाहर हो गया और कई राज्यों की सीमाएँ पार कर गया। राजकुमार संस्कारदास घोड़े से गिर पड़ा और बेहोश हो गया।

कहते हैं घोड़े से गिरा हुआ व्यक्ति कम ही बचता है। जिस राज्य की सीमा में राजकुमार संस्कारदास गिरा, उस राज्य के सीमा प्रहरियों ने देखा कि एक व्यक्ति बेहोशी की अवस्था में राज्य की सीमा में पड़ा है। सीमा प्रहरियों ने राजकुमार संस्कारदास को उठाया और अपने राज्य के राजा रविदास के पास ले गये।

राजा रविदास ने बेहोश राजकुमार संस्कारदास का, मानवीय दृष्टिकोण रखते हुए तुरन्त उपचार करने का निर्णय लिया। राज्य के श्रेष्ठ वैद्यों को बुलाकर बेहोश संस्कारदास को दिखाया।

एक वैद्य ने राजा रविदास को बताया कि-''शरीर पर चोटों को देखने से लगता है कि बेहोश व्यक्ति के मस्तिष्क में गहरी चोट लगी है। अतः इसे आराम की आवश्यकता है तथा पूरे शरीर पर प्रतिदिन मलहम का लेपन होना आवश्यक है।''

राजा रविदास ने अपने उक्त कार्य करने हेतु एक नौकर तथा वैद्य को आदेश दिया। तीन दिन बाद राजकुमार संस्कारदास होश में आया। राजा के नौकरों ने राजकुमार संस्कारदास को राजा के समक्ष पेश किया। राजा रविदास ने राजकुमार से अपना नाम, पिता का नाम पूछा। राज्य की सीमा में आने का कारण पूछा।

राजकुमार संस्कारदास ने सम्पूर्ण वृतान्त राजा रविदास को बताया।

राजा रविदास ने कहा कि ''राजा कर्णदास मेरे मित्र हैं।'' ईश्वर ने मुझे मेरे परम मित्र के राजकुमार का उपचार करने का अवसर दिया है। राजा रविदास ने राजकुमार को कहा-''यह तुम्हारा ही घर है आराम करो और जब पूर्ण रूप से स्वस्थ हो जाओगे तब आपको अपने राज्य में पहुँचाने की व्यवस्था कर दी जायेगी।''

राजकुमार संस्कारदास धीरे-धीरे स्वस्थ होने लगा। परन्तु राजकुमार का समय व्यतीत नहीं हो पा रहा था। एक दिन राजकुमार संस्कारदास राजा रविदास के समक्ष उपस्थित हुआ और अपनी समस्या राजा के सामने रखी तथा कहा कि ''मुझे बांसुरी बजाने का शौक है। मुझे एक बांसुरी उपलब्ध करवाई जाये ताकि मैं बांसुरी बजाकर अपना समय व्यतीत कर सकूँ।''

राजा रविदास ने राजकुमार को बांसुरी उपलब्ध करा दी। राजकुमार संस्कारदास प्रातः चार बजे जाग जाता और अपने कक्ष में बांसुरी बजाने में तल्लीन हो जाता। समय पर पोष्टिक भोजन तथा नियमित रूप से उपचार के कारण राजकुमार ठीक होने लगा।

राजा रविदास के एक राजकुमारी सुकन्या नामक थी जिसकी आयु 22 वर्ष थी। राजकुमारी सुकन्या प्रातः पाँच बजे जागकर स्नान करती तथा कृष्ण भगवान के दर्शन करने, पूजा करने मंदिर जाती। राजकुमारी को बांसुरी की आवाज सुनाई देती। राजकुमारी ने नौकरों से पूछा कि ''यह बासुरी कौन बजा रहा है?'' राजकुमारी सुकन्या को बताया कि ''किसी राजा का राजकुमार यहां अतिथि बनकर रह रहा है, वह प्रातः चार बजे से सारे दिन बांसुरी बजाता रहता है।''

एक दिन राजकुमारी सुकन्या अपने पिता के समक्ष उपस्थित हुई और अतिथि राजकुमार से बांसुरी सीखने की इच्छा बताई। राजा रविदास के इकलौती राजकुमारी थी जिससे राजा उसकी प्रत्येक इच्छा पूर्ण करता था। राजा ने सुकन्या के लिए एक बांसुरी और मंगवा दी तथा राजकुमार संस्कारदास को अपनी पुत्री की इच्छा पूर्ण करने हेतु नौकर से संदेश भिजवा दिया।

राजकुमार सुकन्या को बांसुरी बजाना सीखाने लगा। राजकुमारी लग्न लगाकर बांसुरी बजाना सीखने लगी। सुकन्या राजकुमार को बहुत चाहने लगी। एक दिन सुकन्या ने राजकुमार से अपनी शादी का प्रस्ताव रखा। राजकुमार ने कहा–''मैं यहां तुम्हारे पिता का अतिथि हूं। आपके पिताश्री ने मुझे जिन्दगी दी है अतः यह सम्भव नहीं है।''

राजकुमारी सुकन्या ने शादी करने का हठ किया और कहा मेरे पिताजी आधुनिक विचारों के हैं, आप मेरे पिताश्री से मेरा हाथ माँग लीजिए। वे मना नहीं करेंगे।

राजकुमार संस्कारदास का प्रेम जागृत हो गया और राजकुमार ने राजा रविदास के समक्ष उपस्थित होकर सुकन्या से शादी का निवेदन किया। राजा रविदास ने कहा कि आप मेरे परममित्र कर्णदास के पुत्र हो मुझे आपके हाथ में मेरी पुत्री का हाथ देकर बहुत ही खुशी होती परन्तु मैं सुकन्या की सगाई राजा धर्मदास के राजकुमार कर्मदास के साथ कर चुका हूं। शीघ्र ही पुत्री की शादी कर्मदास के साथ करूंगा क्योंकि –

''रघुकुल रीति सदा चली आई।
प्राण जाय पर वचन ना जाहि।।''

राजकुमारी सुकन्या ने दूसरे दिन राजकुमार से पिता की आज्ञा के बारे में पूछा। राजकुमार ने पिता द्वारा बताई बात सुकन्या को बता दी। सुकन्या ने कहा मैं केवल आपके साथ शादी करूँगी और किसी के साथ नहीं। मैं तुम्हें मेरे पास संचित मुद्राएँ लाकर देती हूँ। उससे एक घोड़ा खरीद लाइये। हम दोनों उस घोड़े पर सवार होकर चुपचाप आपके राज्य चले जायेंगे।

राजकुमार ने मना कर दिया परन्तु त्रियाहठ के सामने राजकुमार को झुकना पड़ा। राजकुमार मुद्राएँ लेकर घोड़े बेचने वाले के पास पहुंचा। घोड़े बेचने वाले ने दो घोड़े बताये। पहले घोड़े की विशेषताएँ बताई कि इस घोड़े की आयु 5 वर्ष है, जवान है, बहुत तेज दौड़ता है, भँवरे टंबरे सब अच्छे हैं। इसका मूल्य दो टका है। दूसरा घोड़ा यह 20 वर्ष का है, बुढ़ा है भंवरे टंवरे सब अच्छे हैं। इसका मूल्य 100 टका है।

राजकुमार संस्कारदास को यह सुनकर आश्चर्य हुआ। राजकुमार ने कहा कि जो घोड़ा जवान है, उसका मूल्य 2 टका तथा जो घोड़ा बुढ़ा है उसका मूल्य 100 टका?

घोड़े बेचने वाले ने बताया कि जवान घोड़े में सब अच्छे गुण हैं परन्तु जहां रास्ते में कुछ पानी आ जाता है, यह वहीं रुक जाता है, किसी भी शर्त पर वह आगे नहीं बढ़ता है। यह अवगुण इसकी माता में भी था और इसकी नानी में भी।

दूसरा घोड़ा बुढ़ा अस्वस्थ है परन्तु यह स्वामी भक्त है। यह धीरे दौड़ता है परन्तु पानी हो या पहाड़ जब तक इसमें ताकत है, यह पानी भी पार कर जायेगा और पहाड़ पर भी चढ़ जायेगा।

राजकुमार संस्कारदास ने 100 मुद्राएँ देकर बुढ़ा घोड़ा खरीदा और उस पर सवार होकर सीधा अपने राज्य चला आया । राजकुमारी सुकन्या इन्तजार करती ही रह गई।

राजकुमार संस्कारदास को शिक्षा मिल गई कि आज सुकन्या मेरे साथ, पिता की इच्छा बिना, भाग रही है। राजा रविदास को कितनी मानसिक पीड़ा होगी? इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। उसी प्रकार राजकुमारी सुकन्या की कोख से पैदा होने वाली मेरी पुत्री भी किसी के साथ भागेगी तब वही मानसिक पीड़ा मुझे भी होगी।

अतः शिक्षा आधुनिक हो परन्तु संस्कार भारतीय।

ब्रिटेन के नवनिर्वाचित ऋषि सुनक ने भागवत गीता को हाथ में लेकर प्रधानमंत्री के पद तथा गोपनीयता की शपथ ली थी। भारत आज पुनः विश्वगुरु बनने को अग्रसर है। भारतीय संस्कृति, संस्कार सर्वश्रेष्ठ हैं।

●

अपनी बात

क्षत्रिय के घर में हमको जन्म मिला है तो परमात्मा से योग का हमारे लिए सरलतम मार्ग है ईश्वर द्वारा प्रदत्त कर्तव्यकर्म करना। क्षात्रधर्म हमारा स्वधर्म है, उसी का अवलम्बन लेकर हमें परमात्मा तक पहुँचना है। परमात्मा तो हमारी भूमि है। हम उसमें समा जाएँ, हमारी जड़ें उसमें फैलें, तो ही हमारे जीवन में आनन्द, उत्सव, नृत्य और गीत का जन्म होता है। फिर परमात्मा के हम हैं और परमात्मा हमारा है।

परमात्मा की खोज कोई दार्शनिक खोज नहीं है। यह कोई सैद्धान्तिक खोज भी नहीं है। यह तो प्राणों की पुकार है। जैसे प्यासा तड़फता है पानी के लिए, ऐसी तड़फ है। पर क्योंकि हमने कर्तव्य पालन छोड़ दिया, कहना चाहिए भूल गए तो फिर वह योग, वह मिलन सम्भव नहीं है। पर जिसको यह दिखाई पड़ जाए कि स्वधर्म पालन में ही हमारी जड़ें हैं और वे जड़ें उखड़ गई हैं तो फिर अन्य सब काम गौण हो गये, फिर एक ही काम अर्थ पूर्ण है कि कैसे हमारी जड़ें वापस जम जाएँ। जिसको यह अच्छी तरह समझ में आजाए कि कर्तव्य कर्म छोड़कर हम जड़हीन हो गए हैं तो फिर एक ही खोज रह जाती है कि कैसे कर्तव्य पालन के मार्ग पर आरूढ हों। कोई अपने घर से भटक जाए तो उसकी फिर सारी खोज एक ही होगी कि कैसे मैं वापिस अपने घर से संयुक्त हो जाऊँ।

जैसे एक छोटा बच्चा मेले में भटक गया हो, मजे से घूम रहा हो, जादूगरी के खेल देख रहा हो, नटों के खेल देखने में मस्त हो रहा हो, तब तक उसे ख्याल नहीं है कि माँ का हाथ छूट गया है। माँ का हाथ छूट गया है, भीड़ में अकेला है मगर अभी उलझा है जादूगरी के खेलों में, नटों के खेलों में, मेले की मस्ती में। लेकिन जैसे ही यह याद आएगी कि माँ कहाँ है, मेरा हाथ माँ के हाथ में नहीं है, फिर मेले के सब जादू फीके हो गये। मेले की रंगीनगी खो गई। एक ही पुकार रह जाएगी, माँ कहाँ है? रोएगा, चिल्लाएगा, खोजने लग जाएगा। अब मेले का रस नहीं रहा।

हमारे समाज की भी ऐसी ही दशा है। संसार रंगीन है। अनेक आकर्षण हैं, रुपए का जादू है। बड़े-बड़े नट यहाँ खेल खेल रहे हैं जो मनमोहक हैं। इसलिए हम भी इन आकर्षणों में उलझ कर भूल गए हैं कि कर्तव्य पालन की परिपाटी से हमारा हाथ छूट गया है, अत: सुरक्षा नहीं रही। यह जिनको याद आगया और जो कर्तव्य कर्म हेतु चल पड़े, उनको तो परमात्मा की डगर मिल गई। यह अभीप्सा जगे और उसके लिए कर्मरत हो जाएँ, इसी में हमारे इस जीवन की सार्थकता है। पूज्य तनसिंह जी की अभीप्सा ने हमें श्री क्षत्रिय युवक संघ दिया। अपना हाथ उसके हाथ में देकर हम जीवन में आनन्द, उत्सव, नृत्य, गीत को जन्म दे सकते हैं। आवश्यकता है हमारे भटकाव को भली प्रकार समझने की, देखने की तभी पुरातन सत्य पथ पर नया पथिक चल पड़ेगा।

●

अनुराग और प्रेम त्याग की पहली उमंग है। अनुरागी और प्रेमी होकर भी त्यागी नहीं हो सकेगा, वह स्वार्थी, प्रेम का केवल ढोंग रचता है। जिनमें यथार्थ अनुराग दिखाई देता है, वे हमें त्याग का अवसर तक भी नहीं देते।

– पू. तनसिंहजी

शिविर सूचना

यह सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष है कि श्री क्षत्रिय युवक संघ के आगामी प्रशिक्षण शिविर निम्न प्रकार से होने जा रहे हैं -

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान, मार्ग आदि
01.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	16.9.2023 से 19.9.2023	ढींगसरी, जिला-बीकानेर
02.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	22.9.2023 से 25.9.2023	राजपूत छात्रावास, प्रतापगढ़
03.	प्रा.प्र.शि (बालिका)	23.9.2023 से 26.9.2023	आलोक आश्रम बाड़मेर
04.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	23.9.2023 से 26.9.3023	बनाड़, जोधपुर
05.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	23.9.2023 से 26.9.2023	जाखण, जिला-जोधपुर
06.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	23.9.2023 से 26.9.2023	रणसीसर, जिला-जोधपुर
07.	प्रा. प्र. शि. (बालक)	23.9.2023 से 26.9.2023	डेरिया (जिला-जोधपुर) पिछले अंक में इस शिविर का समय 27-09-2023 से 30-9-2023 दिया गया था। अब समय बदल गया है।
08.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	23.9.2023 से 26.9.2023	भालीखाळ, जिला-बाड़मेर
09.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	23.9.2023 से 26.9.2023	करीरी, जिला-जयपुर
10.	प्रा.प्र.शि (बालक)	23.9.2023 से 26.9.2023	तामड़िया, जिला जयपुर
11.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	29.9.2023 से 2.10.2023	रूपनगढ़, जिला अजमेर
12.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	29.9.2023 से 2.10.213	शिव मंदिर नागदा (म.प्र.)
13.	प्रा.प्र.शि (बालक)	29.9.2023 से 2.10.2823	आसीन्द (भीलवाड़ा)

दीपसिंह बेण्याकाबास

शिविर कार्यालय प्रमुख, श्री क्षत्रिय युवक संघ

RAGHUKUL DEVELOPERS

NOBLES PROPERTIES & DEVELOPERS

Suryaveer Singh Chundawat
(M) +91 9978099443

Fateh Singh Chundawat
(M) +91 9829081971

31, ओस्तवाल नगर, सुंदरवास, उदयपुर (राज.) - 313001

Email : rahukuldevelopersudaipur@gmail.com

Deals in UIT Converted Plots, Flats, Agriculture Land & Farm Houses

सितम्बर, सन् 2023
वर्ष : 60, अंक : 09

समाचार पत्र पंजी.संख्या R.N.7127/60
डाक पंजीयन संख्या - Jaipur City /411/2023-25

संघशक्ति

ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा,
जयपुर-302012
दूरभाष : 0141-2466353

E-mail : sanghshakti@gmail.com
Website : www.shrikys.org

श्रीमान्..

....

....

स्वत्वाधिकारी श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास के लिये, मुद्रक व प्रकाशक, लक्ष्मणसिंह द्वारा ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर से : गजेन्द्र प्रिन्टर्स, जैन मन्दिर सांगाकान, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर फोन : 2313462 में मुद्रित। सम्पादक-लक्ष्मणसिंह